* श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् *

श्रीगौरांग-लीलामृतम्



श्रीहरिदास शास्त्री

※ श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ※

श्रीगौरांग-लीलामृतम्

श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्तिचरण प्रणीतम्
श्रीकृष्णदास कृतानुवाद सहितम्

श्रीहरिदास शास्त्रि न्यायाचार्य्येण प्रकाशितम्

सद्ग्रन्थ प्रकाशक :

श्रीहरिदास शास्त्री

श्रीगदाधर गौरहरि प्रेस

श्रीहरिदास निवास ■ कालीदह, वृन्दावन (मथुरा)

मुद्रक एवं प्रकाशक :

श्रीहरिदास शास्त्री

श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस,

श्रीहरिदासनिवास, कालीदह

वृन्दावन–मथुरा (उत्तर प्रदेश)

पिन–२८११२१

प्रकाशन तिथि :

अष्टोत्तरशतश्रीप्रभुपाद

श्रील विनोदविहारी गोस्वामी

वेदान्तरत्न महाशय की तिरोभावतिथि

पौष कृष्णा द्वितीया २५-१२-८८

प्रथम संस्करण — १०००

प्रकाशन सहायता— ५.०० रु.

* श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् *

विज्ञप्ति

प्रस्तुत दुर्लभ ग्रन्थ–श्रीगौराङ्गलीलामृत प्रकाशित हुआ। इसमें श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ती प्रणीत श्रीगौराङ्ग देव के अष्ट कालीय लीला सूचक श्लोकसमूह एवं प्राचीन वैष्णव कवि श्रीकृष्णदास कृत छन्दोबद्ध अनुवाद सन्निविष्ट है।

प्रेम भक्ति कादम्बिनी संप्लावितान्तःकरण श्रीश्रीकृष्ण चैतन्यानुगत पार्षदवृन्द प्रणीत ग्रन्थ समूह की भाव धारा विशुद्ध भजन पथ निर्देश हेतु, प्रेमभक्ति संसूचन एवं रसराज-महाभाव-मूर्त्त विग्रह की प्रेमसेवा के परिपाटी-दिग्‌दर्शन के निमित्त ही है, इस विषय में मतद्वैध नहीं हैं।

प्रेम-नित्यसिद्ध परमानन्द मूलक सर्वोत्तम भाव पदार्थ है, अतः इन सबके मत में अन्तिमानुबन्ध प्रेम ही है, मुक्ति एवं त्रिवर्ग पुरुषार्थ नहीं है, भक्तिरसामृत ग्रन्थ में **"सान्द्रानन्द विशेषात्मा, सम्यङ्मसृणित स्वान्तः"** ममत्वादि शयाङ्कित रूप में प्रेम का सुविशद वर्णन हुआ है।

उक्त लक्षणाक्रान्त प्रेम नित्यसिद्ध होने पर भी श्रवण कीर्त्तनादि शोधित चित्त दर्पण में प्रकाशित होता है। अतएव श्रीगौरेश्वर वैष्णववृन्द नवविध भक्त्यङ्ग का आचरण की अतीव प्रयोजनीयता का अनुभव करते हैं, यही प्राचीन विद्वानों का सिद्धान्त है, स्मरण–नवविध भक्ति के अन्तर्गत उपनिषदुक्त निदिध्यासन ही है, जिससे तैलधारावद् अविच्छिन्न प्रवाह सन्तति के द्वारा अभीष्ट ध्येय वस्तु के नाम, गुण, लीला, आदि का स्फुरण, सुष्ठु आवेश,

वाह्य आभ्यन्तर विषयराग का सुविलापन भी होता है। "तस्मात् केनाप्युपायेन मनः कृष्णे निवेशयेत्" "कृष्णं स्मरन् जनञ्चास्य प्रेष्ठं निज समीहितम्" न्याय के अवलम्बन से स्वानुभूत लीला समूह का यत् किञ्चित् दिग्दर्शन करने के निमित्त त्रिताप तापित कलि कलुष हत मानवमात्र के प्रति हितेच्छु होकर कारुण्यैक घनाघन स्वरूप अष्टयामिक लीलामें अवगाहन करने की व्यवस्था सज्जनवृन्दों ने दी है, एवं तदुपयोगि लीलारस परिवेषक ग्रन्थ समूह का प्रणयन भी किया है।

ये सब पद्धति कपोल-कल्पित नहीं हैं। पद्मपुराण के पाताल खण्डस्थ द्विपञ्चाशत् अध्याय में एवं सनत्कुमार संहितामें अष्टकालीन लीला का विवरण है। इसके अवलम्बन से श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामि चरण ने श्रीगोविन्द-लीलामृत ग्रन्थमें, महाकवि श्रीकर्णपूर गोस्वामि चरण ने 'श्रीकृष्णाह्निक कौमुदी' ग्रन्थ में एवं श्रीविश्वनाथ चक्रवर्तीपाद ने 'श्रीकृष्णभावनामृत' ग्रन्थ में तथा श्रीश्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु के अष्टकालीय लीला स्मरण मङ्गल स्तोत्र में अष्टकालीय लीला प्रवाह का विस्तार किये हैं। अष्टकालीन लीला शब्द से श्रीश्रीगौरगोविन्द को अवलम्बन कर निशान्त, प्रातः, पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न, प्रदोष एवं नक्त भेद से दैनन्दिन लीला कलाप को जानना होगा।

यहाँ विशेष ज्ञातव्य यह है कि उक्त सब ग्रन्थ नित्यलीला पारावार का कण मात्र वर्णन में ही चरितार्थ हुए हैं, अतः महानुभाववृन्द के लीला वर्णन में विशेष पार्थक्य परिलक्षित है, यदि उक्त प्रदर्शित पथ के आनुगत्य से महासौभाग्योद्रेक होने पर लीला विशेष में साधक का मन आकृष्ट होता है एवं एक ही लीला के चिन्तन में दिन रात विभोर होता है, तथापि हानि नहीं होती है। इस प्रकार आवेश ही काम्य है। आवेश वृद्धि की गाढ़ता

के तारताय के द्वारा भावसिद्धि होती है।

पर्य्यालोचन से यह प्रतीत होता है कि गौड़ीय वैष्णवों की भावधारा त्रिधा विभक्त होकर श्रीश्रीगौरगोविन्द सेवा स्मरणादि का निर्वाह करती है।

प्रथमत: श्रीश्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु प्रेरित गोस्वामिवृन्द श्रीश्रीगौर चरित चिन्तन में आकृष्ट चित्त होकर भी उनकी आज्ञा से श्रीराधागोविन्द सेवा स्मरण पीयूष वारिधि में निमज्जित हैं। इन सबकी रचना भी बाहुल्य से उक्तार्थ का ही प्रकाश करती है।

द्वितीयत: अखण्ड कीर्त्ति श्रीखण्ड वास्तव्य श्रीमन्नरहरि प्रमुख श्रील सेन शिवानन्द चरण ससौदर्य्य श्रील श्रीवास पण्डित, श्रील प्रबोधानन्द चरण तथा श्रील वासुदेव सार्वभौम प्रभृति श्रीश्रीकृष्ण चैतन्य पादाम्वुज सुधाम्बुराशि का चिन्तन संलील मानस होकर भी कदाचित् स्वेच्छया श्रीराधाकृष्ण पादाम्बुज माध्वीक का भी आस्वादन करते हैं।

तृतीयत: श्रीनिवासाचार्य्य,श्रील नरोत्तम ठाकुर, श्रीश्यामानन्द प्रभु, श्रीगोवर्द्धन निवासी सिद्ध (द्वितीय) श्रीकृष्णदास बाबा प्रभृति श्रीगौराङ्ग चरण सेवा चिन्तन के सहित श्रीराधाकृष्ण लीला रस सागर में निमज्जन का सङ्केत किये हैं। विशेषत: श्रीनिवासाचार्य्य चरण-लीला द्वयामृत सागर में निमज्जित होकर स्मरणलब्ध प्रसाद रत्न को आहरण करके समस्त जनता के नयन गोचर किये हैं। "भक्ति रत्नाकर" नामक ग्रन्थ के ६।१२८-१६५ में यह प्रसङ्ग लिखित है।

श्रीनरोत्तम ठाकुर महाशय भी श्रीश्रीगौर विधु की प्रकटाप्रकट लीला परिकर नक्षत्र माला वेष्टित सुधाचन्द्रिका के द्वारा जनता के मनोमुकुर में चिरसञ्चित तमोराशि का सम्मार्जन किये हैं।

सिद्ध (द्वितीय) श्रीकृष्णदास महोदय ने भी 'भावनासार संग्रह' प्रभृति ग्रन्थों में श्रीगौरलीला चिन्तन के सहित ही श्रीराधाकृष्ण लीला चिन्तन की व्यवस्था दी है। इस प्रकार प्रस्थानत्रय की किसी एक रीति के अबलम्बन से भजनरत साधक को भजन परिपाक से इष्ट लाभ सुनिश्चित है।

रस कीर्त्तन के प्रारम्भ में गौड़ भाषा निबद्ध पदावली में तदुचित गौरचन्द्र नाम से प्रसिद्ध कीर्त्तन रीति भी सहृदय सामाजिक के एकमात्र आस्वादनीय है। प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ती कृत संस्कृत भाषा निबद्ध श्रीमन्महाप्रभु के अष्ट कालीन लीला सूत्र का विशेष विवरण सन्निविष्ट हुआ है।

श्रीश्रीगौरगोविन्द की अष्ट कालीन लीला पद्धति निम्नोक्त प्रकार है—

प्रगे श्रीवासस्य द्विजकुलरवै निष्कुट वरे,
प्रतिध्वान प्रख्यैः सपदि गतनिद्रं पुलकितम् ।
हरेः पार्श्वे राधा स्थितिमनुभवन्तं नयनजै,
र्जलैः संसिक्ताङ्गं वरकनकगौरं भज मनः ॥

निशान्त लीला

श्रीगौरचन्द्र

निशा अवसाने श्रीवासेर उद्यानेते ।
श्रीमणि मन्दिरे रत्न पर्य्यङ्क शोभिते ॥
कुसुम शय्याते शुतियाछे गौरचन्द्र ।
अलि पिक नादे भङ्ग हैल निद्रानन्द ॥
गरगर चित्त, सहजेइ निजभावे ।
ताहाते उदय हय द्वितीय विभावे ॥

श्रीअङ्गे शोभित किवा अद्‌भुत अनुभाव ।
हरिष विषाद शङ्का सञ्चारी प्रभाव ॥
नयन कमले प्रेमानन्द वारि झरे ।
पुलके पूरल किवा गोरा कलेवरे ॥
निकुञ्ज मन्दिरे राधाकृष्णेर विलास ।
स्मरण करिया प्रभु छाड़े घन श्वास ॥
अनुरागे अरुणित नयनारविन्द ।
से माधुरी देखि प्रेमे भासे भक्तवृन्द ॥
अङ्गुलि यन्त्रित दुइ भुज धरि शिरे ।
अङ्गमोड़ा दिल प्रभु अलसेर भरे ॥
जृम्भार उद्‌गमे दन्तकिरण प्रकाश ।
नासापुट प्रफुल्लित छोटिका विलास ॥
हेनकाले स्वरूपादि सब भक्त मिलि ।
महाप्रभुर निर्मञ्छन करे कुतूहली ॥
केह अति सुमधुर स्वरे कर गान ।
मधुर मृदङ्ग केह वाजाय सुतान ॥
करताल मृदङ्गादि सुमेलि करिया ।
प्रभु मुख हेरि नाचे केह मत्त हैञा ॥
एइमत परानन्दे डुबे भक्तगण ।
से आनन्द सब मुखे ना हय वर्णन ॥
तार परे महाप्रभु भक्तगण सङ्गे ।
निज गृहे गमन करये अति रङ्गे ॥
निजद्वारे भक्तगणे करिया विदाय ।
शय्याते शयन करे गोराद्विजराय ॥
निशान्त कालेर एइ गौराङ्ग चरित ।
भावरे आमार मन हैञा आनन्दित ॥

निशान्त लीला

रात्र्यन्ते त्रस्त वृन्देरित बहुविरवैर्बोधितौकीरशारी,
यद्यै हृद्यैरहृद्यैरपि सुखशयनादुत्थितौ तौ सखीभिः ।
दृष्टौ हृष्टौ तदात्वोदित रति ललितौ कक्खटीगीःसशङ्कौ,
राधाकृष्णौ सतृष्णावपिनिज निजधाम्न्याप्ततल्पौ स्मरामि ।।१।।

दिवसागम से शङ्किता वृन्दा श्रीराधाकृष्ण के निद्रा भङ्ग हेतु निशान्त में शुकशारिका प्रभृति जो सब पक्षी को आदेश किये थे, उन सबकी ध्वनिसे एवं प्रिय-अप्रिय कविता पाठके शब्द से प्रबोधित तत् कालोचित आदेश से परम कमनीय, दूर से सखीवृन्द के द्वारा दृष्ट, 'कक्खटी' नाम्नी वानरी के शब्द से शङ्कित, श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण, परस्पर के प्रति सतृष्ण नयनों से अवलोकन करते-करते निज-निज भवन में गमनकर शय्या में शयनरत, उन दोनों का स्मरण मैं करता हूँ ।।१।।

प्रातर्लीला

श्रीगौरचन्द्र

पश्यन्तीं स्वसुतं शची भगवती सङ्कीर्त्तने विक्षतं,
प्रात र्हा कथमेव ते वपुरिदं सूनो बभूव क्षतम् ।
इत्थं लापनतः स्वपुत्र-वपुषि व्यग्रास्पृशन्तीमुहु,
स्तल्पाज् जागरयाञ्चकार यमहं तं गौरचन्द्रं भजे ।।१।।
भक्तैः सार्द्धमुपागतैर्भुवि नतैः श्रीवासगुप्तादिभिः,
पृच्छद्भिः कुशलं प्रगे परिमिलन् प्रक्षाल्य वक्त्रं जलैः ।
पुष्पादि-प्रतिवासितैः सुकथयन् स्वप्नानुभूतां कथां,
स्नात्वाद्याद्धरिशेषमोदनवरं यस्तं हि गौरं भजे ।।२।।

प्रातःकाल में शचीमाता व निज पुत्र विश्वम्भर को संकीर्त्तन में विक्षताङ्ग देखकर 'हाय ! हाय ! पुत्र तुम्हारा शरीर कैसे क्षत हुआ' यह कहकर व्यग्रता से पुत्र के शरीर को स्पर्श कर पुनः पुनः लालन करते करते उनको शय्या से जागरित किये, इस प्रकार गौरचन्द्र का भजन मैं करूँ ॥१॥

प्रभात में श्रीवास पण्डित मुरारि गुप्त प्रभृति भक्तवृन्द श्रीगौराङ्ग के समीप में आकर उनको दण्डवत् प्रणाम पूर्वक कुशल जिज्ञासा करने लगे। श्रीगौराङ्ग उन सबके सहित मिलित होकर भाव-भर से स्वप्नानुभूत विवरण को कहकर स्नान कर अत्युत्कृष्ट श्रीकृष्ण प्रसादी अन्न भोजन करते हैं, मैं उन गौरचन्द्र का भजन करता हूँ ॥२॥

प्रातर्लीला

श्रीकृष्णलीला

राधांस्नात-विभूषितां व्रजपयाहूतां सखीभिः प्रगे,
तद्‌गेहे विहितान्न पाकरचनां कृष्णावशेषाशनाम् ।
कृष्णं बुद्धमवाप्तधेनु-सदनं निर्व्यूढ-गोदोहनं,
सुस्नातं कृतभोजनं सहचरैस्ताञ्चाथ तञ्चाश्रये ॥२॥

जो प्रातःकाल में स्नान के पश्चात् विविध अलङ्कारादि से भूषित एवं यशोदा कर्त्तृक आहूता होकर उनके गृह में सखीवृन्द के सहित यथाविहित अन्न प्रभृति पाक रचना एवं श्रीकृष्ण के भुक्तावशेष भोजन करती हैं, उन श्रीमती राधिका को प्रणाम करता हूँ। एवं जो प्रभात में जागरित होकर गो गृह में गमन करते हैं, यथा नियम गोदोहन, स्नान एवं सहचरवृन्द के सहित भोजन करते हैं मैं उन श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥२॥

पूर्वाह्न लीला

श्रीगौरचन्द्र

हरिवन गतिलीलां व्याकुलीभूत गोष्ठां,
स्मृतिविषयगतां यः कारयामास साक्षात् ।
तदनुकरणकारी भक्तवृन्दस्य मध्ये,
तमहमिह भजामि गौरचन्द्रं हि नित्यम् ।।३।।

सखा सङ्गे श्रीकृष्णेर वनेते गमन ।
ताहाते व्याकुल सब व्रजवासिगण ।।
से लीला स्मरण करि गौराङ्ग सुन्दर ।
तदनु करण लीला करे मनोहर ।।
भक्तवृन्द मध्ये नाना भावे विभूषित ।
अश्रुकम्प स्तम्भ सर्व अङ्गे रोमाञ्चित ।।
एमन श्रीगौरचन्द्र भक्तगण सङ्गे ।
सेवन करिब आमि आनन्द तरङ्गे ।।३।।

श्रीकृष्णलीला

कृष्णं गोभिः स्वमित्रैर्विपिनमनुसृतं गोष्ठलोकानुयातं,
श्रीराधास्फूर्त्तिलोलं तदभिसृतिकृते प्राप्तत् कुण्डतीरम् ।
राधाञ्चालोक्य कृष्णं कृत-गृह-गमनमार्य्ययार्कार्चनायै,
दिष्टां कृष्णप्रवृत्त्यै प्रहितनिजसखी वर्त्मनेत्रां स्मरामि ।।३।।

पूर्वाह्न में जो श्रीकृष्ण, धेनु एवं निज सखावृन्द के सहित वन गमन करने से श्रीनन्द-यशोदा प्रभृति व्रजवासिवृन्द पश्चात् गमन करते हैं, जो श्रीराधा की स्मृति होने के कारण सतृष्ण एवं चञ्चल होकर उनको अभिसारार्थ राधाकुण्ड तीर में उपस्थित होते हैं,

में उन श्रीकृष्ण का स्मरण करता हूँ। एवं जो श्रीराधा नन्दालय में कृष्ण दर्शन के पश्चात् गृह गमनकर आर्य्या जटिला कर्त्तृक सूर्य्य पूजा हेतु आदिष्ट होकर श्रीकृष्णवार्त्ता प्राप्ति आशा से प्रेषित सखी के आगमन पथ के प्रति दृष्टि निक्षेप कर रहती हैं, मैं उन श्रीराधिका का स्मरण करता हूँ ।।३।।

मध्याह्न लीला

श्रीगौरचन्द्र

सहालि श्रीराधासहितहरिलीलां बहुविधां,
स्मरन् मध्याह्नीयां पुलकित तनुर्गदगदवचाः ।
ब्रुवन् व्यक्तं ताश्च स्वजनगण मध्येऽनुकुरुते,
शचीसूनुर्यस्तं भज मम मन स्त्वं व्रत सदा ।।४।।

सखी सह श्रीराधिका कृष्णेर ये लीला ।
स्मरण करिया मध्याह्नेर नाना खेला ।।
व्यक्त कहे, करे सेइ अनुकरण ।
भक्तगण मध्ये नाना भाव विभूषण ।।
महाभाव रसमय मूर्त्ति अद्भुत ।
हेन शची सूत प्रभु भजह त्वरित ।।४।।

श्रीकृष्णलीला

मध्याह्नेऽन्योन्य सङ्गोदित विविधविकारादिभूषाप्रमुग्धौ,
वाम्योत्कण्ठातिलोलौ स्मरमख ललिताद्यालिनर्माप्तशातौ ।
दोलारण्याम्बुवंशीहृति - रति - मधुपानार्कपूजादि - लीलौ,
राधाकृष्णौ सुतृप्तौ परिजन घटया सेव्यमानौ स्मरामि ।।४

मध्याह्न समय में जो परस्पर सङ्गजनित विविध विकार (अष्ट सात्त्विक एवं तेतीस व्यभिचारी) प्रभृति भावरूप भूषण समूह से अति मनोहर, वाक्य एवं उत्कण्ठा से अतिशय लोल (सतृष्ण) कन्दर्प यज्ञ में ललितादि सखीवृन्द के परीहास वाक्य से प्राप्त सुख, एवं दोला, वनविहार, जलकेलि, वंशीहरण, रति क्रीड़ा, मधुपान एवं सूर्य्य पूजादि विविध लीला में तत्पर होकर जो परिजनों के द्वारा सेवित हो रहे हैं, मैं उन श्रीराधाकृष्ण का स्मरण करता हूँ ।।४

अपराह्ण लीला

श्रीगौरचन्द्र

परावृत्ति गोष्ठे व्रजनृपतिसूनोर्विपिनतो,
महानन्दाम्भोधेः सपदि जनयित्रीं स्वहृदये ।
स्मरन् श्रीगौराङ्गो नटति बलते निःश्वसिति च,
क्षणं मुह्यन् सर्वान् विवशयति यस्तं भज मनः ।।५।।

तबे अपराह्ण लीला स्मरण से करे ।
गौरचन्द्र लीला चिन्ते आनन्द अन्तरे ।।
धेनुगण प्रिय सखागण करि सङ्गे ।
वन हइते व्रजे कृष्ण याय नाना रङ्गे ।।
नटवर - वेश - चूड़ा मयूरेर पुञ्छ ।
गले वनमाला कर्णे अशोकेर गुञ्छ ।।
गोरजे धूसर मुख चन्द्र शोभा करे ।
परागे भूषित येन लीलाम्बुज वरे ।।
अधरे मुरली धरि बाजाय सुस्वरे ।
सखागण दल शृङ्ग नाना वाद्य करे ।।
उच्च पुञ्छ करि याय धेनु व्रज माझे ।
हाम्बा हाम्बा ध्वनि येन जलद गरजे ।।

अट्टालिते श्रीराधिका देखिया कृष्णेरे ।
नानाभाव विभूषित हय कलेवरे ॥
सेइ भाव विभावित हइया गौरहरि ।
व्रजलीला रूप गुण स्मरण से करि ॥
स्तम्भ कम्प अश्रु घर्म पुलक हुङ्कार ।
आनन्द तरङ्ग उठे कत शत आर ॥
भक्त माझे नाना लीला करे प्रकटन ।
हेन प्रभुपाद पद्म भज मोर मन ॥५॥

श्रीकृष्णलीला

श्रीराधां प्राप्तगेहां निजरमणकृते क्लृप्तनानोपहारां,
सुस्नातां रम्यवेशां प्रियमुखकमलालोकपूर्णप्रमोदाम् ।
कृष्णं चैवापराह्ले व्रजमनुचरितं धेनुवृन्दैर्वयस्यैः,
श्रीराधालोकतृप्तं पितृमुखमिलितं मातृमृष्टं स्मरामि ॥५

सखा सङ्गे लैञा कृष्ण सहधेनुगण ।
व्रजपति कत रङ्गे करये गमन ॥
मुरलीर शब्दे व्रजे करे आकर्षण ।
गोधूलि पटले व्याप्त देखिया गगने ॥
सर्व कर्म तेजिया वृद्ध, तरुणी बालक ।
कृष्णेर सम्मुखे याय देखिते उत्सुक ॥
श्रीराधिका गृहे आसि स्नानादि करिया ।
षोड़श शृङ्गार अङ्गे भूषण करिया ॥
कृष्ण भोजन जन्य नाना विध पाक करि ।
कृष्णके देखिते याय सङ्गे सहचरी ॥
समुत्सुके राजमार्गे व्रजद्वारि स्थित ।
सब व्रजवासिगण आनन्दे उन्मत्त ॥

कृष्ण ता सवारे मिलि यथा विधि क्रम ।
दर्शन स्पर्शन वाक्य स्मितावलोकन ॥
गोपवृद्ध सवाकारे नमस्कार करि ।
शरीर वचन मने आदर आचारि ॥
पिता माता पदे करे साष्टाङ्ग प्रणति ।
हे नारद ! रोहिणीके करे तथा नति ॥
नेत्रेरे कटाक्षेते विनयेते प्रियागणे ।
सबाकारे सत्कार करे येन यार मन ॥
एइ मत व्रजवासिजन श्रीकृष्णेरे ।
निजभावे यथोचित सत्कार से करे ॥
गोशालाय धेनुगण प्रवेश कराया ।
पितार वचने गृहे याय हर्ष हैञा ॥
बलदेव सङ्गे स्नान भोजनादि करि ।
माता आज्ञा लैञा गोशालाय याय हरि ॥
धेनु दुग्ध दोहन करिते हर्ष मन ।
गोष्ठे प्रवेशिल सङ्गे लइया सखागण ॥
कृष्ण अवशेष राधा सखीगण सङ्गे ।
भोजन करिया अट्टालिते वैसे रङ्गे ॥

तबे राइ गिय घरे, निजरमणेर तरे,
नाना उपहार विरचिया ।
भाल करि स्नान कैला, रम्य वेश वानाइला,
सुखी हैला कान्ते निरखिया ॥
अपराह्नकाल हेरि, श्रीकृष्ण ओ व्रजपुरी,
चलिला सखा ओ धेनु लिया ।
श्रीराधार मुख देखि, आनन्दे भरल आँखि,
अति तृप्त हइ लेक हिया ॥

पिता आदि गुरुजन, सबा सह सुमिलन,
बहु लालि लेन मातागण ।
एइ अपराह्लीला, सूत्र करि प्रकाशिला,
सदा एइ आमार स्मरण ॥५॥

सायाह्न लीला

श्रीगौरचन्द्र

सायन्तनीं कृष्ण मनोज्ञलीलां,
स्नानाशनाद्यां हि मुहुर्विचिन्त्य ।
स्वभक्तमध्येऽनुकरोति नित्यं,
तां यो मनस्तं भज गौरचन्द्रम् ॥१॥

सायंकाले कृष्णेर लीला मनोहर ।
सङरिया गौरचन्द्र प्रेमेते विभोर ॥
भक्त माझे करे येइ मतानुकरण ।
भावेते उन्मत्त हैआ करे सङ्कीर्त्तन ॥
कदम्ब केशर जिनि पुलक शरीर ।
सुरधुनीधारा येन नयनेर नीर ॥
हुङ्कार गर्जन नाना भाव विभूषण ।
हेन गौरचन्द्र पद भज मोर मन ॥

श्रीकृष्णलीला

सायं श्रीराधां स्वसख्या निजरमणकृते प्रेषितानेकभोज्यां,
सख्यानीतेशशेषाशनमुदितहृदं तां च तं च व्रजेन्दुम् ।
सुस्नातं रम्यवेशं गृहमनुजननीलालितं प्राप्तगोष्ठं,
निर्व्यूढ़ोस्त्रालिदोहं स्वगृहमनु पुनर्भुक्तवन्तं स्मरामि ॥६॥

सायंकाले हैञा सुखी, श्रीराधिका सुधामुखी,
आपनार सखीगण दिया ।
परम प्रेमेर भरे, निज रमणेर तरे,
बहु भोज्य दिल पाठाइया ।।
कृष्णेर भोजन हैले, प्रसादावशेष तुले,
ताहारा आनिला राइ स्थाने ।
आहार करिया ताइ, प्रमोदे पूर्णिता राइ,
हइलेन सखीगण सने ।।
श्रीगोविन्द स्नान करि, अङ्गे राय वेश धरि,
लालित हइया मातृ घरे ।
पक्वान्नादि ओ रसाला, आनन्दे भोजन कैला,
चलिलेन गोदोहन तरे ।।
करि गोदोहन लीला, नाना सुकौतुक खेला,
पुनः आसि आपन भवन ।
करि सबे सुखदान, अन्न व्यञ्जनादि खान,
एइ लीला करये स्मरण ।।६।।

प्रदोष लीला

श्रीगौरचन्द्र

समुत्कण्ठासन्नाकलितहरिवार्त्तावत यथा,
भिसृत्यासौ राधा हरिमपि निकुञ्जे गतवती ।
तथात्मानं मत्वा कटि निहित पाणि विशति च,
स्खलन् गच्छन् गौरो नटति धृतकम्पाश्रु पुलकः ।।७।।

पूर्व लीला गौरचन्द्र करिया स्मरण ।
अति उत्कण्ठाते व्याकुलित तनु मन ।।

नयन कमले मकरन्द करि झारे।
कदम्ब केशर यिनि पुलक शरीर॥
गद्‌गद वाणी आध आध कथा कहे।
चल सखि! विलम्ब नाहि सहे॥
एत कहि मत्त गजराज गति जिनि।
गमन करये गौरचन्द्र गुणमणि॥
कखण स्खलित गति कभु धीरे धीरे।
चलिते चलिते गेला श्रीवासेर घरे॥
श्रीवास प्राङ्गणे दिव्य मण्डप सुन्दर।
ताहाते वसिला याइया गोरा द्विज वर॥
चतुर्दिक निज भक्त मण्डली विराजे।
तारापति मध्ये येन राकापति साजे॥
हेन गौरहरि लीला स्मर मोर मन।
दन्ते तृण धरि मुञि करु निवेदन॥७॥

श्रीकृष्णलीला

राधां सालीगणान्तामसितसित निशायोग्यवेशा प्रदोषे,
दूत्या वृन्दोपदेशादभिसृतयमुनातीरकल्पागकुञ्जाम्।
कृष्णं गोपैः सभायां विहितगुणिकलालोकनं स्निग्धमात्रा,
यत्नादानीय संशायितमथ निभृतं प्राप्तकुञ्जं स्मरामि॥७॥

शय्या हइते उठि कृष्ण बलराम सङ्गे।
गमन करये राजसभा मध्ये रङ्गे।
सबाकारे यथा योग्य करिया सम्मान।
आसन उपरे वैसे आनन्देर धाम॥
सूत मगध पौराणिक बन्धु जन।
निज निज कला सबे करे उद्‌घाटन॥

तथा कृष्ण नाना विध कौतुक देखिया ।
मनोहर गीत वाद्य कविता शुनिया ॥
धनधान्य वस्त्रादि ता सबाके दिया ।
यथा युक्त सम्मान कैल हर्ष हैञा ॥
माता दासद्वारे रामकृष्ण बोलाइया ।
शय्याते शोयाय दुग्धपान कराइया ॥
सेवाते नियुक्त करि सब दासगण ।
तबे व्रजराणी गृहे करये गमन ॥
कृष्णचन्द्र प्रिया प्रेमे हइया उन्मत्त ।
कुञ्जेते गमन करे अति अलक्षित ॥
तथा श्रीराधिका शय्या हइते उठिया ।
आसने वसिल निजमुख प्रक्षालिया ॥
सित कृष्ण निशा योग्य वेश सखीगण ।
श्रीराधिका अङ्गे पराय वसन-भूषण ॥
हे नारद ! मोर काछे दूतिका पाठाय ।
सन्देश लइते तेँहो ताँर स्थाने याय ॥
सेइ ताँर अभिसार त्वरित कराय ।
सखीगण सङ्गे गृह हइते वाहिराय ॥
कभु शीघ्र गति चले कभु धीरे धीरे ।
एइमत प्राप्ति हैल यमुनार तीरे ॥
कल्पवृक्ष निकुञ्जेते दिव्य रत्नमय ।
मन्दिर विराजे शोभा वर्णन ना याय ॥
सखीगण सङ्गे ताते प्रवेश हइल ।
कुञ्ज शोभा देखि चित्ते चमत्कार पाइल ॥
प्रदोषेर आगमने सखी सब हर्षमने तरे श्रीराधाय ।
शुक्ला कृष्ण यामिनीर, योग्य वेशकरि स्थिर सयतने से रूपे साजाय ॥

वृन्दादत्त उपदेशे कृष्ण विमोहिनी वेशे सखी सह यमुनार तीरे ।
कल्पवृक्ष कुञ्जगण, याहा अति सुशोभन, तथा यान हरषेर भरे ।।
गोविन्द प्रदोष काले, गोपगण सह मिले, गुणिकला कौतुक देखिया ।
सबे करि सुखदान, सभा हइते घरे यान, गुणिगणे पुरस्कार दिया ।।
माता अतियत्न करि, घरे आनाइया हरि, मनसुखे कराय शयन ।
क्षणेक शुतिया कृष्ण, अन्तरे हइया तृष्ण, सुखे कुञ्जे करेन गमन ।।
राधाकृष्णे दरशन, आनन्दे भरये मन, नाना भावे दुँहु अङ्गे भरे ।
सखी सङ्गे परिहास, रसमय सुविलास, स्मरि आमि आपन अन्तरे ।।७

नक्तलीला

श्रीगौरचन्द्र

श्रीश्रीवासगृहे मुदापरिवृतोभक्तैः स्वनामावलीं,
गायद्भिर्गलदश्रुकम्प पुलको गौरो नटित्वा प्रभुः ।
पुष्पाराम गते सुरत्न शयने ज्योत्स्ना युतायां निशि,
विश्रान्तः स शचीसुतःकृतफलाहारो निषेव्यो मम ।।८।।

गौरचन्द्र नित्यानन्द अद्वैत आचार्य्य ।
गदाधर श्रीबासादि यत भक्त वर्य्य ।।
श्रीवास प्राङ्गणे आरम्भिल सङ्कीर्त्तन ।
चतुर्द्दिके मण्डली करिया भक्तगण ।।
मध्ये नाचे गौरचन्द्र गदाधर सङ्गे ।
नित्यानन्द अद्वैत आचार्य्य कत रङ्गे ।।
जय कृष्ण गोविन्द गोपाल बनमाली ।
नामावली गाय सबे देय कर तालि ।।
ताथै ताथै वाजे मधुर मृदङ्ग ।
चरणे नूपुर ध्वनि अद्भुत तरङ्ग ।।

नानाफुले वनमाला शोभे गौर अङ्ग ।
नयन कमले वहे जाह्नवी तरङ्ग ॥

कदम्ब कुसुम जिनि पुलक मुकुल ।
धर्म्म बिन्दु बिन्दु शोभे अति मनोहर ॥

थर थर काँपे अङ्ग येन चल दल ।
कण्ठे ना निःसरे वाणी गद्गद स्वर ॥

क्षणे अङ्ग स्तम्भ हय क्षणेते विवर्ण ।
क्षणे मूर्च्छा हय, क्षणे हुङ्कार गर्जन ॥

क्षणे अट्ट शब्द हासे, क्षणे गड़ि याय ।
जाम्बुनद जिनि तनु धूलाते लोटाय ॥

चतुर्द्दिके भक्तगण हरि हरि बोले ।
केह कारो कण्ठ धरि बले उच्चैःस्वरे ॥

एइमत कतक्षण करि सङ्कीर्त्तन ।
विश्राम करेन प्रभु लैया भक्तगण ॥

दासगण नानाविध करये सेवन ।
पाद सम्बाहन आर ताम्बूल व्यजन ॥

नानाविध फल आर विविध पक्वान्न ।
भक्तगण सङ्गे लैया करेन भोजन ॥

आचमन करि मुखे ताम्बूल लइया ।
पुष्पोद्याने दिव्यगृहे शय्याते याइया ॥

शयन करेन प्रभु श्रीशचीनन्दन ।
दासगण नानाविध करये सेवन ॥

एइत गौराङ्ग लीला करिल वर्णन ।
एवे राधाकृष्ण लीला शुन भक्तगण ॥

श्रीकृष्णलीला

तावुत्कौ लब्धसङ्गौ बहु परिचरणैर्वृन्दया राध्यमानौ,
प्रेष्ठालीभिर्लसन्तौ रतिगतमनसौ मृष्टमाध्वीकपानौ,
गानैर्नर्म्म प्रहेलीलपनसुनटनै रासलास्यादि रङ्गैः ।
क्रीड़ाचार्य्यौ निकुञ्जे विविध रतिरणोद्धत्यविस्तारतान्तौ ॥८

निकुञ्ज मन्दिरे राधाकृष्ण उत्कण्ठाते ।
मिलिलेन दुहुँजन सखीगण साथे ॥
वृन्दादेवी सङ्गे लइया वनदेवीगण ।
अति अनुरागे कैल दुँहार सेवन ॥
छय ऋतु सुसेवित शोभा वृन्दावन ।
विहार करिते दुँहु करिल गमन ॥
श्रीराधिकार दक्षिणाकर धरि वाम करे ।
श्रीगोविन्द गजराज गति चले धीरे धीरे ॥
आगे आगे वृन्दादेवी करये गमन ।
दक्षिणे ललिता, वामे विशाखा शोभन ॥
ताम्बूल वीटिका दुँहु करे समर्पण ।
चामर व्यजन करे कोन सखीगण ॥
कुसुम लकुटी लैञा केह चले आगे ।
केह पाछे पुष्पछत्र धरे अनुरागे ॥
चतुर्द्दिके सखी सब गान करे रङ्गे ।
वने विहरये दुँहु आनन्द तरङ्गे ॥
एइमत वन क्रीड़ा करि हर्ष मने ।
प्रवेश हइल याञा यमुना पुलिने ॥
सखीगण चतुर्द्दिके मण्डली रचिया ।
मध्ये नाचे राधाकृष्ण आनन्दित हैया ॥

गान, वाद्य, नृत्य, रास विलासादि करि ।
कान्ता लैञा मधुपान करिल श्रीहरि ।।
मधुपान मदे सबार घूर्णित नयन ।
निकुञ्ज मन्दिरे याञा करिल शयन ।।
कान्तागण सङ्गे रति क्रीड़ादि करिया ।
यमुनाते जल क्रीड़ा कैल हर्ष हैया ।।
तीरे उठि वसन - भूषण सुचन्दन ।
अञ्जन सिन्दूर माला केशर सघन ।।
परस्पर अङ्गे सब करिया शृङ्गार ।
निकुञ्जे भोजन कैल नाना उपहार ।।
भोजन समाप्ति करि कैल आचमन ।
कुसुम शय्याते दुँहु करिल शयन ।।
सखीगण निज निज कुञ्जेते याइया ।
शय्याते शयन कैल आनन्दित हैया ।।
दासीगण राधाकृष्णेर करये सेवन ।
पाद सम्बाहन करे चामर व्यजन ।।
एइमत सुखे दुहुँ करिल शयन ।
निज निज स्थाने शयन कैल दासीगण ।।
एइ निशा लीला हय कर्ण रसायन ।
दिशा मात्र किछु आमि करिल वर्णन ।।
एकदिन साधकेर कृत्य एइ हय ।
ए लीला स्मरणे प्रेम भक्ति विलसय ।।

श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ति ठाकुर कृत–श्रीगौराङ्ग स्मरण मङ्गल स्तोत्र के पयारादि छन्द में अनुवादकर्त्ता कृष्णदास, श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ति पाद के शिष्य थे। इनके द्वारा कृत पयारादि छन्द में अनुवाद–चमत्कार चन्द्रिका, माधुर्य्य-कादम्बिनी, रागवर्त्म चन्द्रिका

भागवतामृत कणा, भक्ति रसामृत सिन्धु विन्दु एवं उज्ज्वल नीलकिरण ग्रन्थ में है। चमत्कार चन्द्रिका के पयारानुवाद में आत्म परिचय इस प्रकार है—

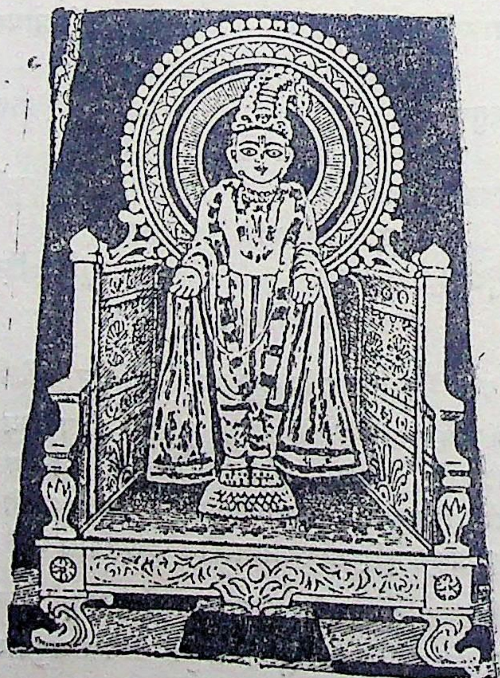
राधाकुण्डे दिल वास, ताहे नाहि विशोयास,
मन सदा दुष्ट पथे धाय।
निजगुणे कृपा करि, उद्धारह ए पामर,
नहे आर ना देखि उपाय॥
विश्वनाथ चक्रवर्त्ती, ताँर कृपा बले स्फूर्त्ति,
ए लीला वर्णने हैल आश।
कानुदास सङ्ग पाजा, साहसे पूरित हिया,
कहे दीन हीन कृष्णदास॥

माधुर्य्य कादम्बिनी ग्रन्थ के अनुवाद के अन्तिम में लिखित है—

माधुर्य्य कादम्बिनी ग्रन्थ पृथिवी कैल धन्य।
चक्रवर्त्ति मुखे वक्ता श्रीकृष्ण चैतन्य॥
श्रील विश्वनाथ चक्रवर्त्ती गुरु ताँर चरण ध्याने।
षष्ठ अमृत वृष्टि तार भाषा दीन कृष्णदास भणे॥

श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ति पाद कृत श्रीगौराङ्ग स्मरण मङ्गल के पयारादि छन्द में श्रीगौराङ्ग लीलामृत नामक अनुवाद ग्रन्थ का प्रथम प्रकाशन श्रीगौराङ्गब्द ४०२ में हुआ था।

श्रीहरिदास शास्त्री

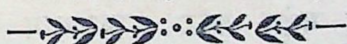


श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु

※ श्रीश्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ※

श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी अष्टकालीय लीला

स्मरणमङ्गलस्तोत्रम्



श्रीगौराङ्गमहाप्रभोश्चरणयो र्या केशशेषादिभिः
सेवा गम्य तया स्वभक्तविहिता सान्यै र्यया लभ्यते ।
तां तन्मानसिकीं स्मृतिं प्रथयितुं भाव्या सदा सत्तमै-
र्नौमि प्रात्यहिकं तदीयचरितं श्रीमन्नवद्वीपजम् ॥१॥
रात्र्यन्ते शयनोत्थितः सुरसरित्स्नातो बभौ यः प्रगे
पूर्वाह्णे स्वगणैर्लसत्युपवने तैर्भाति मध्याह्नके ।

श्रीगौराङ्ग महाप्रभुर चरण सेवन ।
ब्रह्मा रुद्र शेष आदि करे आराधन ॥
एकमात्र भक्तगणे सतत सेवये ।
सेइ सेवा अन्य जनेर याते लभ्य हय ॥
सेइ मानसिक सेवा करि विस्तारित ।
गौराङ्ग चरित्र नित्य साधुर सेवित ॥१॥
प्रातःकाले शय्या हैते करि गात्रोत्थान ।
सुवासित जले कैल मुख प्रक्षालन ॥

यः पुर्व्यामपराह्णके निजगृहे सायं गृहेऽथाङ्गने
श्रीवासस्य निशामुखे निशि वसन् गौरः स नो रक्षतु ॥२

रात्र्यन्ते पिककुक्कुटादिनिनदं श्रुत्वा स्वतल्पोत्थितः
श्रीविष्णुप्रियया समं रसकथां सम्भाष्य सन्तोष्य ताम्।
गत्वान्यत्र धरासनोपरिवसन् स्वद्भिः सुधौताननो
यो मात्रादिभिरीक्षितोऽतिमुदितस्तं गौरमध्येम्यहम् ॥३

तैलादि मर्द्दन करि गङ्गास्नान कैल।
श्रीविष्णु अर्चना करि भोजन करिल॥
पूर्वाह्ण समये भक्त मन्दिरे गमन।
कृष्णकथा रसानन्द कभुत कीर्त्तन॥
मध्याह्ने परमानन्द सुरधुनी कुले।
नवद्वीप भ्रमणापराह्ले कुतूहले॥
सायाह्ले गमन करे आपनार पुरे।
प्रदोषे गणेर सह श्रीवास-मन्दिरे॥
निशाते करेन तथा नाम सङ्कीर्त्तन।
निशार्द्धे स्वगृहे गिया करेन शयन॥२॥
निशान्ते पिक कुक्कुटेर ध्वनि शुनि।
शय्या हैते उठिलेन प्रभु गौरमणि॥
रसकथाय श्रीविष्णुप्रियाय सन्तोषिला।
अन्य स्थाने गिया धरासनेते वसिला॥
शोभन सलिले करे मुख प्रक्षालन।
हरषिते शचीदेवी करे दरशन॥३॥

प्रातः स्वःसरिति स्वपार्षदवृतः स्नात्वा प्रसूनादिभि-
स्तां संपूज्य गृहीतचारुवसनः स्रक्चन्दनालङ्कृतः।
कृत्वा विष्णुसमर्चनादि सगणो भुक्त्वान्नमाचम्य च
द्वित्रं चान्यगृहे क्षणं स्वपिति यस्तं गौरमध्येम्यहम् ॥४॥
पूर्वाह्ले शयनोत्थितः सुपयसा प्रक्षाल्य वक्त्राम्बुजं
भक्तैः श्रीहरिनामकीर्त्तनपरैः सार्द्धं स्वयं कीर्त्तयन्।
भक्तानां भवनेऽपि च स्वभवने क्रीड़न्नृणां वर्द्धय-
त्यानन्दं पुरवासिनां य उरुधा तं गौरमध्येम्यहम् ॥५॥
मध्याह्ने सह तैः स्वपार्षदगणैः सङ्कीर्त्तनादोद्दशं
साद्वैतेन्दु गदाधरः किल सह श्रीलावधूतप्रभुः।

प्राते स्वपार्षद सह गङ्गास्नान कैल।
गङ्गापूजा करि माल्य-वसन परिल॥
मिष्टान्न पक्कान्न आदि योगाय भक्तगण।
विष्णवालये याञा कैल विष्णुर पूजन॥
तबे भक्तगण सह करेन भोजन।
ताम्बूल चर्वण करि करिल शयन॥४॥
पूर्वाह्लेते शय्या हैते करि गात्रोत्थान।
सुवासित जले कैल मुख प्रक्षालन॥
सभक्ते आनन्द हरिनाम सङ्कीर्त्तने।
स्वभवने कभु कभु भक्तेर भवने॥
पुरवासि ग्रामवासि आनन्दे भाषिल।
पूर्वाह्लेर लीला एइ संक्षेपे कहिल॥५॥

आरामे मृदुमारुतैः शिशिरितै भृंङ्गद्विजैर्नादिते
स्वं वृन्दाविपिनं स्मरन् भ्रमति यस्तं गौरमध्येम्यहम् ॥६

यः श्रीमानपराह्लके सह गणैस्तैस्तादृशैः प्रेमवां-
स्तादृक्षु स्वयमप्यलं त्रिजगतां शर्माणि विस्तारयन् ।
आरामात्तत एति पौरजनता चक्षुश्चकोरोड़ुपो
मात्रा दूरमुदेक्षितो निजगृहं तं गौरमध्येम्यहम् ॥७॥

मध्याह्ने पार्षद सह कीर्त्तनातिशय ।
अद्वैत गदाधरादि नित्यानन्द राय ॥
गङ्गातीरे भ्रमे कभु कभु रम्य वने ।
गङ्गार लहरी आर शीतल पवने ॥
नाना पक्षी रव करे भ्रमर झङ्कार ।
देखि वृन्दावन स्मृति हइल सभार ॥
राधाभावे मत्त प्रभु अधैर्य्य हइल ।
मध्याह्ने स्मरण एइ संक्षेपे कहिल ॥६॥
अपराह्ले गण सह प्रेमे मत्त हैल ।
त्रिजगन्मङ्गल लागि विस्तार करिल ॥
तबे भक्तगण सह गृहे आगमन ।
देखि पुर-ग्रामवासि आनन्दित मन ॥
हरषिते शचीदेवी करे निरीक्षण ।
चक्षुर पुतली गौर सभार जीवन ॥
नाना स्नेहे शचीदेवी करेन लालन ।
अपराह्ल कालेर एइ कहिल स्मरण ॥७॥

यस्त्रिस्रोतसि सायमाप्तनिवहैः स्नात्वा प्रदीपालिभिः
पुष्पाद्यैश्च समर्चितः कलित सत्पट्टाम्बरः स्रग्धरः ।
विष्णोस्तत्समयार्चनञ्च कृतवान् दीपालिभिस्तैः समं
भुक्त्वान्नानि सुविटिकामपि तथा तं गौरमध्येम्यहम् ॥८॥
यः श्रीवासगृहे प्रदोषसमये ह्यद्वैतचन्द्रादिभिः
सर्वैर्भक्तगणैः समं हरिकथां पीयूषमास्वादयन् ।
प्रेमानन्दसमाकुलश्च चलधीः सङ्कीर्त्तने लम्पटः
कर्त्तुं कीर्त्तनमूर्द्ध्वमुद्यमपरस्तं गौरमध्येम्यहम् ॥९॥
श्रीवासादिभिरावृतो निजगणैः सार्द्धं प्रभुभ्यां नट-
न्नुच्चैस्तालमृदङ्गवादनपरैर्गायद्भिरुल्लासयन् ।

सायाह्ने पार्षद सह गङ्गास्नान कैल ।
भक्तगणे प्रदीपादि पुष्प ये अर्चिल ॥
पट्टाम्बर पड़िलेन समाल्य चन्दन ।
दीप पुष्पादिते कैल श्रीविष्णु अर्चन ॥
सभक्त भोजन करि ताम्बूल चर्विल ।
सायाह्ने सायाह्नलीला स्मरण हइल ॥८॥
प्रदोषे गमन कैल श्रीवास भवने ।
नित्यानन्द अद्वैतादि सर्व भक्तगणे ॥
श्रीहरिर कथामृत करे आस्वादन ।
प्रेमानन्दे समाकुल हञा क्षणे क्षण ॥
कीर्त्तने लम्पट सदा उच्च सङ्कीर्त्तन ।
प्रदोषे भक्तेर सह कीर्त्तन उद्यम ॥९॥
निशाय श्रीवास गृहे सह निजगण ।

श्रीमान् श्रील गदाधरेण सहितो नक्तं विभात्यद्भुतं
स्वं गौरे शयनालये स्वपिति यस्तं गौरमध्येम्यहम् ॥१०॥
श्रीगौराङ्गविधोः स्वधामनि नवद्वीपेऽष्टकालोद्भवां
भाव्यां भव्यजनेन गोकुलविधोर्लीलास्मृतेरादितः ।
लीलां द्योतयदेतदत्र दशकं प्रीत्यन्वितो यः पठेत्
तं प्रीणाति सदैव यः करुणया तं गौरमध्येम्यहम् ॥११॥

इति श्रीमद्विश्वनाथचक्रवर्त्ति ठक्कुरेण विरचितं श्रीगौराङ्गाष्टकालीय लीला-स्मरणमङ्गलस्तोत्रं समाप्तम् ॥

उच्च सङ्कीर्त्तने प्रभु करेन नर्त्तन ॥
मृदङ्गादि वेणु वीणा नाना ताल आर ।
उल्लासेते नृत्य करे श्रीगौरसुन्दर ॥
मण्डलि करिया नाचे गदाधर सङ्गे ।
अद्भुत नर्त्तन प्रभु करे नाना रङ्गे ॥
तबे निजालये आसि शयन करिल ।
निशाकालेर लीला एइ संक्षेपे कहिल ॥१०॥
नवद्वीपे नित्य एइ गौराङ्ग चरित ।
अष्टकालेर लीला सदा साधुर भावित ॥
श्रीवृन्दावन लीलार आदिते स्मरण ।
करिले हइवे प्रभुर कृपार भाजन ॥
प्रीतियुक्त हैञा नित्य ये करे पठन ।
मनो मत फल देन श्रीशचीनन्दन ॥
श्रीगौराङ्ग-चरणपद्म मने करि आश ।
नवद्वीपस्मरणी भाषा कहे कृष्णदास ॥११॥

श्रीगौराङ्गलीलामृतम्

—:०)*(०:—

जय गौर नित्यानन्द जयाद्वैतचन्द्र ।
गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द ॥
वन्देऽहं श्रीशचीसूनुं गौरचन्द्रं महाप्रभुम् ।
नित्यानन्दप्रभुं श्रीमदद्वैतं तद्‌गणैः सह ॥
प्रथमे वन्दिब गुरु वैष्णव चरणे ।
यार कृपाबल मोर जीवने मरणे ॥
जय जय गौरचन्द्र शचीर कुमार ।
जय जय नित्यानन्द प्रभु ये आमार ॥
जय श्रीअद्वैत गदाधर कृपासिन्धु ।
जय श्रीवासादि भक्त अनाथेर बन्धु ॥
श्रीगुरुचरणपद्म हृदये धरिया ।
गौराङ्गलीलामृत कहि संक्षेप करिया ॥
इथे अष्टकालक्रम अति रसायन ।
प्रथमेइ गीतसूत्र करह श्रवण ॥

गीतं तुड़ी—

निशिशेषे गोरा घुमेर आवेशे शयन पालङ्कोपरे ।
हेन जन नाहि ये बारेक से शोभा हेरिया पराण धरे ॥
प्रभाते जागिया निजपरिकर बेष्टित अङ्गने बसि ।
जगजन मन हेलाय हरिया हियाते थाकये पसि ॥

दन्तधावनादि सारि सुरनदी स्नानादि आनन्दावेशे।
निजगृहे गणसह ये भोजन कौतुक शयन शेषे॥
पूर्वाह्ण समये शुक्लाम्बर आदि भकतगणेर घरे।
प्रेमेर आवेशे अवश हइया विविध विलास करे॥
मध्याह्न कालेते अति मनोहर पुष्पेर कानन माझे।
कत कत रङ्गे तरङ्गे विभोर सङ्गे पारिषद साजे॥
अपराह्ण काले प्रियगण मेलि भुवनमोहन वेश।
नदीया नगरे फिरे घरे घरे शोभार नाहिक शेष॥
सन्ध्याकाले निज भवने गमन अति अपरूप रीत।
देव वन्दनादि करये यतने याहाते मायेर प्रीत॥
प्रदोषे श्रीवास मन्दिरे प्रवेश अधिक उल्लास हिया।
तथा प्रियगण मन अनुरूप करये अद्भुत क्रिया॥
निशाये सकल परिकर सह सुखे सङ्कीर्त्तन करि।
पुन आसि निज प्रियार मन्दिरे भने दास नरहरि॥१

—०—

पयार

रात्रि शेषे गोराचाँद शयनमन्दिरे।
झलमल अङ्ग से अनङ्ग मन झुरे॥
हेममय खट्टा-खुरा प्रवाले निर्मित।
तुलियुक्त श्वेतवस्त्र ताहाते मण्डित॥
सुरङ्ग पाटेर डोर बद्ध चारि कोण।
मणिमय थोप ताहे अरुण किरण॥

उच्च चारि स्वर्णदण्ड ताहे सुवलन ।
ऊर्द्ध्वे चन्द्रतापलग्न ताहे सुरचन ॥
लम्बित दोलये सूक्ष्म मुकुतार हार ।
स्वर्ग हैते पड़े येन सुरधनी धार ॥
तल्प येन कैलासेर सुरचित खण्ड ।
शोभये बालिस येन नवनीत पिण्ड ॥
शुभ्र चीनवस्त्रेर पालङ्क आच्छादनी ।
तथि मध्ये सुति आछे गोरा द्विजमणि ॥
तपत काञ्चन यिनि सुबलन अङ्ग ।
अलसे अवश सब विपरीत रङ्ग ॥
चाँचर चिकुर यार कुटिल कुन्तले ।
श्लथ मुक्तादाम तहि मल्लिकार माले ॥
चन्दनेर शोभे ऊर्द्ध्व तिलक सुन्दर ।
कुङ्कुम कस्तुरी फल्गुबिन्दु मनोहर ।
सुचिक्कण गण्डे साजे कुन्तल रतन ।
काम-शरासन यिनि भ्रू भङ्ग पत्तन ॥
गौराङ्ग नयन शोभा उपमा करिते ।
भाविया ना हय किछु विधिर शिल्पिते ॥
बुझि काम गोराभुरु भङ्गिमार डरे ।
अङ्ग हीन हइया अनङ्ग नाम धरे ॥
किवा सतीगणचित्त हरिणी बान्धिते ।
मदनेर जाल केवा करिल निर्मिते ॥

निद्राते मुद्रित दुइ कमल नयन।
निबिड़ सुस्थिर पक्ष्म असित बरण॥
पक्व विम्बफल यिनि सुरङ्ग अधर।
ईषत हर्षित मुख जगमनोहर॥
पीन वक्ष शोभा करे नानाविध हारे।
आजानुलम्बित भुज अति सुगभोरे॥
भुजद्वये नवरत्न बलयामण्डित।
श्रीअङ्ग शोभित घन चन्दने चर्चित॥
सूक्ष्म शुभ्रवस्त्र साजे नितम्ब उपरे।
उत्तरीय सुशोभित बेड़िया शरीरे॥
प्रान्तभाग सुवर्णेर कुसुम अञ्चल।
क्षीण यज्ञसूत्र तहि अति सुनिर्मल॥
कर-पदतलारुण जलज विकाश।
कराङ्गुली मुद्रिकाते तिमिर विनाश॥
सुखमय सुगठन कनक मन्दिर।
चारिभागे चारि मणि कुट्टिम प्राचीर॥
सुवर्ण कलस ध्वज मन्दिर उपरे।
पूर्णचन्द्राकृति मणि स्थूल मुक्ताहारे॥
दुइ पाशे शोभे अष्ट स्फटिकेर स्तम्भ।
रजतेर हंसपांति ऊर्द्ध्वे अवलम्ब॥
चारिदिके चारिद्वार रतन खिचनि।
माझे माझे जड़ा तहि मरकत मणि॥

कनक कबाटे शोभे प्रवाल अर्गला ।
स्फटिक सम्पुटे दीप्ति करे दीपमाला ॥
प्रकाण्ड दर्पणश्रेणि अवलम्बि भिते ।
राधाकृष्णरसकेलि ताहाते चित्रिते ॥
कृत्रिम कुसुमवृक्ष पद्म शतदल ।
दर्पणेर माझे माझे शोभे सुनिर्मल ॥
कमलेर छाया हेरि मुकुर भितरे ।
पद्मवन भ्रमे अलि शत शत फिरे ॥
चतुर्दिके शोभे अष्ट दुयार गवाक्ष ।
रविर मण्डल विड़म्बने हय दक्ष ॥
सूर्य्यकान्त मणि बद्ध गवाक्ष दुयारे ।
माणिक रतन लग्न तार वाह्यान्तरे ॥
मन्दिर वेदिका आर चत्वर प्राङ्गण ।
स्फटिक पाथरे बान्धा सोपान शोभन ॥
मन्दिरेर अन्ते गृहाराम पुष्पवन ।
डाले डाले वसियाछे कोकिलादिगण ॥
कुसुम आमोद सह शीतल समीरे ।
वृक्षशाखा दोलाइया वहे धीरे धीरे ॥
रतन पादुका छत्र सुश्वेत चामर ।
गृहद्वारे धरियाछे देखिते सुन्दर ॥
पालङ्केर दुइ पार्श्वे हेम सन्दानिका ।
रतन सम्पुटे ताहे ताम्बूल बीटिका ॥

सुवासित जलपूर्ण सुवर्णेर झारि ।
निकटे शोभये आलबाटि आदि करि ॥
कीर्त्तन विहार श्रम अलसेर भरे ।
सुतियाछे गौरशशी पालङ्क उपरे ॥
मन्दिरेर कोणे स्वर्ण पिञ्जरेते कीर ।
निशि शेष देखि चाहे हइया अस्थिर ॥
गौराङ्ग जागाब बलि आनन्दित मन ।
पुलके प्रफुल्ल पाखा सजल नयन ॥
सुमधुर शब्दे डाके उठ गोराराय ।
अस्ताचल आड़े हिमकर प्रवेशय ॥
उदयाचलेते देख अरुण प्रकाश ।
भ्रमरा छाड़ये कुमुदिनीर निवास ॥
दिशा सुप्रकाश देखि चक्रवाकी रङ्गे ।
उड़िया मिलये आसि चक्रवाक सङ्गे ॥
हंस सारसादि करि जलचरगण ।
सुरधुनी तीरे सब करिल गमन ॥
खगवृन्द कपोतादि करये फुनकारे ।
जन सब निज कार्य्ये फिरये नगरे ॥
मृग मृगीगण सब मण्डली तेजिया ।
यूथे यूथे चले तृण भोजन लागिया ॥
निद्राभङ्ग हैल शुनि कीरेर वचन ।
ईषत मिलये दुइ कमल लोचन ॥

वृन्दावन कुञ्जलीला सङरिया मने ।
निश्चल हइया रहे कपट शयने ॥
गृहान्तरे सुतियाछे देवी विष्णुप्रिया ।
शय्या तेजि उठे शीघ्र प्रभात देखिया ॥
अलसेर भरे चले मन्थर गमने ।
चकित चाहिया गेला शचीर अङ्गने ॥
भूषण नूपुर ध्वनि शुनि सुमधुरे ।
द्वार मुक्त करि शची हइला बाहिरे ॥
बधूरे देखिया कहे सुमधुर वाणी ।
गृहकार्य्य करि याह स्नाने सुरधुनी ॥
तबे शचीदेवी पुत्र लालन कारण ।
द्रुतगति चले अति व्याकुलित मन ॥
गौराङ्ग-शयन-गृहे प्रवेश करिला ।
निःशब्द हइया तल्प निकटे बसिला ॥
पुत्रेर श्रीअङ्गे हस्त धीरे धीरे दिया ।
मन्दस्वरे कहे बड़ यतन करिया ॥
उठ बापु गोराचाँद प्रभात हइल ।
नगर निवासिगण जागिया बसिल ॥
श्रीवासादि करिया यतेक भक्तगण ।
तोमार दर्शने सबार उत्कण्ठित मन ॥
अति शीघ्र करि पथे करिल गमन ।
निद्रा तेजि उठि कर मुख प्रक्षालन ॥

जननीर वचन शुनिया गोराराय ।
अङ्ग मोड़ा दिया उठि बसिला खट्टाय ॥
हेनइ समये श्रील सीताठाकुराणी ।
पतिव्रतागण सङ्गे करिया मालिनी ॥
शचीर आलये सब आसिया मिलिला ।
गौराङ्ग शयन-गृहे प्रवेश करिला ॥
नगरेर नारी सब उत्कण्ठित मने ।
गौराङ्ग दर्शन लागि करिला गमने ॥
सुवर्ण थालिते घृत कर्पूर सहित ।
प्रदीप जालिला शची हइ हरषित ॥
आनि समर्पिला ताहा मालिनीर करे ।
निर्मञ्छन कैला तेँह गौराङ्ग सुन्दरे ॥
स्वर्ण पादपीठ आर जलपूर्ण झारि ।
रसना-मार्जनी दन्त काष्ठ आदि करि ॥
दासगणे यत्न करि धरिया राखिला ।
मन्दिर तेजिया गोरा प्राङ्गणे आइला ॥
गृहान्तरे याइ तबे प्रातःक्रिया करि ।
आसिया बसिला पादपीठेर उपरि ॥
दन्तधावनादि क्रिया सारि सेइ क्षणे ।
आसिया बसिला पुन उत्तम आसने ॥
प्रभु नित्यानन्द श्रीअद्वैत गदाधर ।
मुकुन्द मुरारि हरिदास बक्रेश्वर ॥

शुक्लाम्बर ब्रह्मचारि श्रीधरादि करि।
सत्वरे आइला सभे प्रातः क्रिया सारि॥
आसिया मिलिला सभे प्रभुर भवन।
यथारीते चरण बन्दिला भक्तगण॥
दक्षिणे बसिला आसि प्रभु नित्यानन्द।
वामे गदाधर चारि पाशे भक्तवृन्द॥
सम्मुखे बसिला तबे शान्तिपुरराय।
कि शोभा हइल ताहा कहने ना याय॥
तबे विष्णुप्रिया देवी सखीगण सङ्गे।
सुरधुनी सिनाने चलिला बहुरङ्गे॥
कनक-दामिनी यिनि अङ्गेर बरण।
शतकोटि चाँद शोभा सुचारु वदन॥
वेणी भुजङ्गिनी शोभे नितम्ब उपरे।
ग्रन्थित कनक झाँप वकुलेर हारे॥
कुटिल कुन्तल येन भ्रमरेर पाँति।
दुइ गण्ड झलमल मुकुरेर भाँति॥
कर्णे साजे मणिमय कर्णिका भूषण।
निम्ने दोले क्षुद्र झाँपा मुकुता खिचन॥
कर्णभूषा भार भये सुवर्ण शिकले।
शलाका सहिते बद्ध करि श्रुति मूले॥
स्वर्ण सूत्रे सूक्ष्म मुक्ता करिया रचन।
पद्मरागमणि माझे सिँथार बन्धन॥

कपाले सिन्दूर बिन्दु प्रभात अरुण ।
कस्तूरी चित्रित तार पाशे सुशोभन ॥
मृगमद बिन्दु शोभे चिबुक उपरे ।
सुरङ्ग अधरे मृदु हास मनोहरे ॥
चकित चाहनि येन चञ्चल खञ्जन ।
भुरुर भङ्गिमा देखि काँपये मदन ॥
तिल फुल जिनि नासा गजमुक्ता दोले ।
गले चन्द्रहार तहि मालतीर माले ॥
छोट बड़ क्रम करि सुवर्णेर हारे ।
कण्ठदेशे शोभा करियाछे थरे थरे ॥
कुचयुग शोभा स्वर्ण कलस जिनिया ।
कनक चम्पक कलि उपरे बेड़िया ॥
चन्दनेर पत्रावलि ताहाते लिखन ।
गजमति हारे मणि चतुष्कि शोभन ॥
सुवर्ण मृणाल भुजयुगेर बलन ।
शङ्ख मणि-कङ्कणादि ताहे विभूषण ॥
वाजुबन्ध वलया बन्धन भुजमूले ।
तहि बद्ध पट्ट आदि स्वर्णझाँपा दोले ॥
राङ्गा करतलाङ्गुली मुद्रिका मण्डित ।
तर्ज्जनीते शोभे हेम मुकुरे जड़ित ॥
परिधाने शोभै दिव्य पट्ट मेघाम्बरे ।
अञ्चल निर्माण मणि-मुकुताझालरे ॥

गुरुया नितम्ब आर क्षीण मध्यदेशे।
किङ्किणी रसनामणि ताहाते विलसे॥
रातुल चरणयुग यावक मण्डित।
बङ्कराज रतन नूपुर विभूषित॥
मधुर गमन गति हंसराज जिनि।
चटक गुञ्जये येन नूपुरेर ध्वनि॥
नवनीत जिनिया कोमल तनु खानि।
हास परिहासे स्नान करि सुरधुनी॥
गृहे आसि वस्त्र परिवर्त्त ये करिला।
विष्णुपूजा लागि सज्ज करिते लागिला॥
शची ठाकुराणी शीघ्र स्नानादि करिया।
गृहके आइला शीघ्र विलम्ब तेजिया॥
तबे सीतादेवी सङ्गे करिया मालिनी।
आर यत प्रियभक्तगणेर गृहिणी॥
स्नान क्रिया करि गृहे करिला गमन।
आसि प्रवेशिला त्वरा शचीर भवन॥
उत्तम सामग्री यार घरे याहा छिल।
दासी करे दिया यत्न करिया आनिल॥
हर्षे शचीमाता सबा लइया चलिला।
चरण पाखालि पाकशाला प्रवेशिला॥
विष्णुप्रिया देवीरे कहये शची आइ।
बेलाधिक हय मा गो पाकघरे याह॥

आज्ञा पाइ हरषित मने विष्णुप्रिया ।
शीघ्र पाक करिवारे बसिलेन गिया ॥
रन्धनेर कार्य्य यत करेन मालिनी ।
ईङ्गिते शिक्षान सब सीताठाकुराणी ॥
प्रथमेते परमान्न करिया रन्धने ।
पूर्ण करि थुइलेन नूतन भाजने ॥
विविध प्रकार शाक करिया रन्धन ।
मानकचु वार्त्ताक्वादि लाफरा व्यञ्जन ॥
शुकुतादि मोचाघण्ट मरिचेर झाले ।
मुद्ग सूपे शुका आम्र करिया मिसाले ॥
घृतसिक्त सूप बहु पृथक् करिला ।
मासबड़ा मुद्गबड़ा घृतेते भाजिला ॥
नारिकेल शस्य भाजा फुलबड़ी आर ।
तिलमिश्र वार्त्ताक्वादि विविध प्रकार ॥
अन्न रान्धिलेन बहु यतन करिया ।
मधुराम्ल धरिलेन पृथक् करिया ॥
अम्लदधि मासबड़ा सह सिक्त करि ।
जीरामरिचादि दिया रन्धन ये करि ॥
गोधूम चूर्णेर पिष्टक अनेक करिला ।
घृतसिक्त करि ताहा यतने धरिला ॥
माठा शिखरिणी आदि सरसूपी करि ।
अनेक करिला ताहा वर्णिते ना पारि ॥

उत्तम तण्डुल बहु करि सुसंस्कार।
यतने करेन पाक करिया अपार॥
अन्य घरे करे केह दुग्ध आवर्त्तन।
मिष्टान्न पक्वान्न आदि करे कोन जन॥
गोधूमेर चूर्ण सह शर्करा माखिया।
लाड़ु बान्धिलेन बहु यतन करिया॥
गोधूमचूर्णेर करि कुण्डली आकृति।
घृते भाजि राखिलेन रसेर संहति॥
छेना खिरिसादि माखि सर्करा सहिते।
लाड़ु बान्धिलेन करि दाड़िम्ब आकृते॥
सीतामिश्र करि आर चक्राकृति खाजा।
पटोल चनक बहु करि घृते भाजा॥
दुग्ध आवर्त्तिया क्षीर करिलेन घन।
पुरिया राखिला नव मृत्तिका भाजन॥
एलाचि कर्पूर मरिचादि ताहे दिया।
शीतल करिते शीघ्र राखिला धरिया॥
दुग्धलाउ दधिलाउ करिलेन पाक।
लबन विहीन घृते भाजिलेन शाक॥
तिलालाड़ु नवादादि रसाला करिया।
घृतसिक्त दधि मृत्कुण्डिका पूरिया॥
घनावर्त्त दुग्ध दिव्य चाँपाकला आर।
काल अनुचित फल अनेक प्रकार॥

दाड़िम्ब कमला इक्षु चिनिपाना करि।
विविध संस्कार नारिकेल तदुपरि॥
नाराङ्ग बादाम आर सुपिण्ड खर्जूर।
नेम्बु द्राक्षा सीता मिश्रि नवनी प्रचुर॥
मुद्‌ग चनकादि शस्य यतन करिया।
पूर्वरात्रे थुया छिला जले भिजाइया॥
लवन माखिया ताहा पृथक् धरिल।
आचार आनिल गृहे यतेक आछिल॥
पक्व आम्र फल चिनि रसे डुवाइया।
बहु दिन हैते शची राखिला धरिया॥
कासनादि धात्री हरीतकीर आचारे।
सब निकसिया आनि दिलेन बाहिरे॥
शचीदेवी आसि पाकशाला प्रवेशिला।
अन्न व्यन्जनादि देखि आनन्द बाड़िला॥
बधूरे कहये कत विलम्ब रन्धन।
लज्जाये आकुला देवी ना कहे वचन॥
मालिनी कहये तबे शुन देवी आइ।
रन्धन हइल आर बिलम्ब से नाइ॥
शची कहे एइ विष्णुभोगेर सदन।
निजहस्ते आमि ताहा करिल मार्जन॥
भोग सज्ज शीघ्र याइ कर सेइ घरे।
एतेक कहिया तबे आइला बाहिरे॥

बाहिर हइया आसि कहिला ईशाने।
विश्वम्भरे कह शीघ्र यान गङ्गास्नाने॥
मोरे मन:पीड़ा देन बहु बेला हैल।
अन्न व्यञ्जनादि सब शीतल हइल॥
ईशान आसिया तबे कहिला प्रभुरे।
गङ्गास्नाने याह माता आज्ञा कैला मोरे॥
इहा शुनि महाप्रभु आनन्दित मन।
भक्तगण लइ स्नाने करिला गमन॥
पुष्पमाला गाँथि बहु घषिला चन्दन।
सुगन्धि सुतैल आर अङ्ग उद्वर्त्तन॥
धौतवस्त्र आदि लइ करिला गमने।
भक्तेर सहित यान कथोपकथने॥
भक्तगण सङ्गे तबे श्रीगौराङ्गराय।
गङ्गाजल परशिया नामिला गङ्गाय॥

श्रीचैतन्यभागवते—

नदीयार सम्पत्ति के वर्णिबारे पारे।
एक घाटे लक्ष लक्ष लोक स्नान करे॥
कतेक वा शान्त-दान्त कत वा सन्न्यासी।
ना जानि कतेक शिशु मिले तथा आसि॥
चतुर्द्दिके प्रभुरे बेड़िया, जह्नु सुता।
तरङ्गेर छले जल देय अलक्षिता॥

तरङ्गेर छले नृत्य करेन जाह्नवी ।
अनन्त ब्रह्माण्ड यार पदयुगसेवी ॥
गङ्गाजले केलि करे नवद्वीपराय ।
परम सुकृति सब देखे नदीयाय ॥
गङ्गाजले केलि करे प्रभु विश्वम्भर ।
समुद्रेर माझे येन पूर्ण शशधर ॥
गङ्गाघाटे स्नान करे ये सुकृति जन ।
सबेइ चाहेन विश्वम्भरेर वदन ॥ इति ।

अङ्ग उद्वर्त्तन लैया आइला कोन दासे ।
मार्जन करिला अङ्ग करिया विशेषे ॥
तबे स्नान करि प्रभु भक्तगण सङ्गे ।
सुरधुनी तटेते उठिला बहु रङ्गे ॥
अङ्ग मोछाइल आसि कोन दासगण ।
केश सुसंस्कार कैल करिया यतन ॥
वस्त्र परिबर्त्तन करि श्रीमाल्य-चन्दन ।
अङ्गे परिलेन यत अङ्गेर भूषण ॥
गृहे आसि प्रभु पाद प्रक्षालन करि ।
विष्णुगृहे प्रवेशिला गौराङ्ग श्रीहरि ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

यथाविधि विष्णु पूजि गौर भगवान् ।
तुलसीरे जल दिया करिला प्रणाम ॥

तबे प्रभु आसि स्वर्ण पीठेते बसिला।
मिष्टान्न यतेक विष्णु निवेदन कैला॥
शचीदेवी ताहा स्वर्ण पात्रेते करिया।
यत्न करि पुत्र आगे राखिल लइया॥
सुवर्ण भाजने सुवासित जल दिला।
किछु भक्षणादि करि विरले बसिला॥
नित्यानन्द प्रभु आर अद्वैत गोसांइ।
नरहरि गदाधर श्रीवास रामाइ॥
बक्रेश्वर हरिदास आदि भक्तगणे।
गङ्गास्नान करि निज आलये गमने॥
गृहे आसि सबे नित्यकृत्य ये करिया।
प्रभुर बाड़िते पुन मिलिला आसिया॥
विष्णुप्रिया देवी तवे समापि रन्धने।
शचीर आदेशे गेला भोगेर सदने॥
उभारिला भात बहु सुवर्ण थालिते।
सारि सारि राखिलेन सिक्त करि घृते॥
व्यञ्जनादि यत किछु रन्धन करिल।
क्रम करि ताहा सब पाशेते धरिल॥
पक्वान्नादि करि आर यतेक आचारे।
निसकड़ि प्रथम धरिल थरे थरे॥
सुवर्ण भाजने जल सुवासित करि।
कर्पूर सहिते छानि राखिलेन धरि॥

रतन सम्पुटे धरि उत्तम ताम्बूल ।
लबङ्ग एलाची आदि यत अनुकूल ॥
तुलसी-मञ्जरी अन्न उपरे धरिल ।
शालग्रामे समर्पिया आचमन दिल ॥
तबे शचीदेवी बड़ हरषित मने ।
गण सह पुत्र बोलाइलेन भोजने ॥
नित्यानन्द प्रभु सङ्गे आर भक्तगण ।
शीघ्र चलिलेन तबे करिते भोजन ॥
चरण पाखालि दिव्य आसनेते गिया ।
बसिलेन गौरचन्द्र भक्तगण लैया ॥
नित्यानन्द गदाधर वैसे दुइ पाशे ।
सम्मुखे अद्वैत आर बसिला श्रीवासे ॥
अङ्गने बसिला तबे यत भक्तगणे ।
पारस करेन शची आनन्दित मने ॥
अन्न व्यञ्जनादि करि यत उपहार ।
पारस करेन शची आनि बार बार ॥
स्नेहाकुल हैया शची करान भोजने ।
अन्तरे थाकिया देखे पतिव्रतागणे ॥
हास-परिहासे प्रभु करिला भोजन ।
जल आनि योगायेन यत दासीगण ॥
आचमन करि गिया बसिला आसने ।
चारिदिके बसिलेन सब भक्तगणे ॥

हासिया करेन प्रभु ताम्बूल भोजन।
चामरादि सेवा करे कोन दासीगण॥
तबे सीतादेवी सङ्गे लइया मालिनी।
आर यत सब भक्तवृन्देर गृहिणी॥
शचीदेवी आसि सबाकारे बसाइया।
भोजन करान बड़ हरषित हैया॥
भोजनादि सारि सबे निज गृहे गेला।
विष्णुप्रिया सह शची भोजन करिला॥
आचमन करि आसि बिरले बसिला।
ईशानादि सबे आसि भोजन करिला॥
दासगण गृह आदि संस्कार करि।
पात्रादि निर्मल करि राखिलेन धरि॥
नित्यानन्द आदि करि यत भक्तगण।
विश्राम करिते सबे करिला गमन॥
सबारे बिदाय दिया प्रभु विश्वम्भरे।
आसि प्रवेशिला शीघ्र शयन मन्दिरे॥
पालङ्क उपरे गिया करिल शयन।
चरण सेवन करे कोन प्रियजन॥
गदाधर नरहरि आदि कत जने।
गृह माझे प्रभु सङ्गे करिला शयने॥
श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द दासेर अनुदास।
प्रथमकालेर लीला कहे कृष्णदास॥

इति श्रीगौराङ्गलीलामृते प्रथमकालीय लीला वर्णनम्॥१॥

प्रातर्लीला

—:०:—

कतक्षण अन्तरेते प्रभु विश्वम्भर ।
उठिया बसिला तबे पालङ्क उपर ॥
गदाधर आदि सब जागिया बसिला ।
सुवर्ण झारिते जल दासे आनि दिला ॥
तबे प्रभु करिया से मुख प्रक्षालन ।
बसिलेन परम आनन्दयुक्त मन ॥
क्षणमात्र विश्राम करिया भक्तगणे ।
निज निज कर्मे सबे हइ सावधाने ॥
प्रभु मिलिवारे सबे उत्कण्ठित मन ।
समय जानिया ताहा ना कैल गमन ॥
केह भागवत शास्त्र करेन विचारे ।
केह केह मिलिलेन अद्वैत मन्दिरे ॥
केह केह पाँच सात एकत्र हइया ।
करेन कीर्त्तन सबे हाते तालि दिया ॥
एइ मत भक्तगण यार येइ मति ।
परस्पर रहे सबे सबार संहति ॥
श्रीवासादि करिया कतेक भक्तजन ।
आसिया मिलल सबे प्रभुर सदन ॥
चरण वन्दन करि सबेइ रहिला ।
आलिङ्गन करि प्रभु सबा बसाइला ॥

तबे प्रभु गदाधर आदि करि सङ्गे ।
शुक्लाम्बर गृहेते चलिला बहुरङ्गे ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

निरन्तर गदाधर थाकेन संहति ।
प्रभु गदाधरेर विच्छेद नाहि कति ॥ इति ॥

निज प्रभु देखि शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी ।
सम्भ्रमे उठिला निज कार्य्य परिहरि ॥
चरण वन्दन करि चरण धुइल ।
उत्तम आसने तबे प्रभु बसाइल ॥
नित्यानन्द गदाधर बैसे दुइ पाशे ।
सम्मुखे अद्वैत आदि आर यत दासे ॥
जाह्नवी निकटे शुक्लाम्बरेर कुटीर ।
तहि विलसये गोरा सुन्दर शरीर ॥
पुलिन कदम्बश्रेणी सुरधुनी तीरे ।
लक्ष लक्ष शिखि पिक भ्रमर गुञ्जरे ॥
यमुना स्मरण करि गर-गर मन ।
स्फुरिल कृष्णेर गोष्ठे गोधन चारण ॥
श्रीदाम सुदाम स्तोककृष्ण हे अर्जुन ।
दादा बलराम बलि डाकये सघन ॥
गदाधर आदि सब सजल नयने ।
आवेशित चित सबे प्रभुर दर्शने ॥

हेन मते ताहा नानाविध लीला करि ।
तथा हैते उठिलेन गौराङ्ग श्रीहरि ॥
शीघ्र आइलेन प्रभु श्रीधरेर घर ।
सपार्षदे गौर देखि उठिला श्रीधर ॥
पाद्यादि समर्पि कैल चरण वन्दन ।
बसिलेन महाप्रभु प्रफुल्ल वदन ॥
भक्तगण सबे बसिलेन चारि भिते ।
हासिया कहेन कथा श्रीधर सहिते ॥
देखि से मोहन रूप श्रीधर सहित ।
वचन ना स्फुरे किछु हइला स्तम्भित ॥
कतक्षण थाकि प्रभु श्रीधर भवने ।
उठिया चलिला मत्त कुञ्जर गमने ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

निरन्तर सबार वाड़िते प्रभु याय ।
चतुर्भुज षड्‌भुजादि सबारे देखाय ॥
क्षणे याय गङ्गादास मुरारिर घरे ।
क्षणे चलये आचार्य्यं रत्नेर मन्दिरे ॥ इति
तबे प्रभु सङ्गे लइ निज भक्तजने ।
आसि बसिलेन दिव्य पुष्पेर उद्याने ॥
श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द दासेर अनुदास ।
द्वितीयकालेर लीला कहे कृष्णदास ॥

इति श्रीगौराङ्गलीलामृते द्वितीयकालीय लीला वर्णनम् ॥२॥

पूर्वाह्ण एवं मध्याह्नलीला

—:०)*(०:—

हेन मते गौरचन्द्र आसि पुष्पोद्याने ।
निरीखये वन शोभा अरुण नयने ॥
सेइ त कुसुम वन सुविस्तार स्थल ।
चतुर्द्दिके उच्च अति कदम्ब मण्डल ॥
कदम्ब तलाते घन केतकी कानने ।
सेइ त कण्टके चारि दिके आवरणे ॥
भिन्न लोक गति ताहा ना हय कखन ।
दूर हैते देखये कण्टकमय वन ॥
माधवी मालती उठे कदम्ब बेड़िया ।
वहये मलयवायु पराग लइया ॥
चारि दिके चारि पथ रतने बन्धन ।
दुइ दिके बकुलेर श्रेणी सुशोभन ॥
कुन्द करवीर कुरुवक सुटगर ।
रतन कलाप गन्धराज नागेश्वर ॥
याति यूथि आदि आर मल्लिका सुवास ।
केशर लबङ्गलता निकर प्रकाश ॥
पाटल किंशुक वृक्ष शोभे सारि सारि ।
पुन्नाग चम्पक बहु अशोकादि करि ॥
स्थाने स्थाने रत्नवेदी अति मनोहर ।
छत्राकृति तरुलता ताहार उपर ॥

तमाले शोभये घन पल्लव नूतन ।
बेड़िया कनकलता ताहे आरोहण ॥
प्रफुल्ल मन्दिर तरु अरुण वरणे ।
मुकुलित आम्रचारा शोभे स्थाने स्थाने ॥
वृक्षतले पिण्ड बान्धा देखिते सुन्दरे ।
जम्बु पनसादि कत सुरस जम्बीरे ॥
वन अन्तभाग बेड़ि कदलक वन ।
प्रफुल्लित केह पक्व हरित वरण ॥
सारि सारि नारिकेल धरे बहु फल ।
गुवाकेर श्रेणी माझे खर्जुर श्रीफल ॥
मिष्टि बदरिका आर कमला नारङ्ग ।
धात्री हरीतकी आदि एलाची लवङ्ग ॥
फल फुले नम्र डाल पृथिवी परशे ।
दाड़िम्ब फाटिया स्थल सिक्त करे रसे ॥
सारि सारि सुबदरी शफरी शोभन ।
कतेक प्रकार वृक्ष ना हय वर्णन ॥
मध्य स्थाने आछे एक विचित्र मन्दिर ।
सम्मुखे तड़ाग तार सुशीतल नीर ॥
स्फटिक पाथरे हय सोपान बन्धन ।
चारि दिके चारि घाट रतने खिचन ॥
काञ्चनादि स्थलपद्म पुष्प शेफालिका ।
कनक चम्पकलता सुचन्द्र मल्लिका ॥

सरोवर तटे सब शोभे सारि सारि ।
निरमल जले पुष्प कानन नेहारि ॥
फुलभरे नम्र डाल परशये जल ।
श्वेत नील अरुणादि प्रफुल्ल कमल ॥
मधुर तरङ्ग चले सुधीर समीरे ।
पद्म टल-मल अलि बसिते ना पारे ॥
मधुलोभे उड़े कत लाखे लाखे भृङ्ग ।
विहरये हंसराज सारस विहङ्ग ।
चक्रवाक् आदि आर टिटिपक्षि कत ।
जलचरगण जले फिरे शत शत ॥
कनक वेदिका सह कनक मन्दिर ।
ताहे बसि आछे गोरा कनक शरीर ॥
चारि दिके पारिषद कनक वरण ।
प्रेमे डगमग अङ्ग सजल नयन ॥
द्वादश दुयारे शोण कनकेर स्तम्भ ।
वाह्ये स्वर्णदण्डे चन्द्रातप अवलम्ब ॥
दुयारे ग्रथित सब मल्लिकार हारे ।
ऊर्द्ध्वे नीलमणि थोप दोले थरे थरे ॥
पूरब प्राङ्गणे दिव्य तुलसी कानन ।
पश्चिम प्राङ्गणेऽमल मदनक वन ॥
उत्तर दक्षिणे दूर्वा श्यामल वरण ।
कोमल आसन प्राय हेन लय मन ॥

पालित कुरङ्ग सब फिरे तृण आसे ।
देखिया गौराङ्ग रूप लोचन प्रकाशे ॥
नीपवृक्ष हइते मयूर नामिया ।
सुखे नृत्य करे गोरा माधुरी देखिया ॥
द्रुमलता आदि सब कनक पुष्पित ।
षड़् ऋतुगणे वन सदाइ सेवित ॥
चातक डाकये घन कोकिल कुहरे ।
डाहुक डाहुकीगण भूमेते विहरे ॥
पक्व विम्ब देखि किर चञ्चु दिया रय ।
चाष-पक्षि कपोतादि वृक्षे विलसय ॥
सारि शुक डाके जय श्रीशची-नन्दन ।
जय नरहरि गदाधरेर जीवन ॥
जय जय नदीया-नगर पुरन्दर ।
जय जय लक्ष्मी विष्णुप्रिया प्राणेश्वर ॥
जय जय राधाकृष्ण मिलि एक तनु ।
जय जय प्रकट कलपतरु यनु ॥
वृन्दावन-वासी मोरा पुरुषे पुरुषे ।
अधिक बाड़ये प्रेम नदीया विलासे ॥
शुनि विश्वम्भर देव शुकेर पठन ।
राधाकुण्ड-लीला मने हइल स्मरण ॥
क्षणे कहे केवा मोर वंशी कैला चुरि ।
क्षणे कहे खेलि पासा देखि जिनि हारि ॥

क्षरो कहे ऐ कुण्डे हय जलकेलि।
क्षरो बले चल याइ सूर्य्य-पूजा स्थली॥
क्षरोके चलये धरि गदाधर करे।
गरा सह प्रभु पुष्प कानने विहरे॥
कुसुम अङ्गद हार केशेर बन्धन।
पारिषदगरा सब कुसुमे भूषरा॥
कुसुम बारिया क्षिति आच्छादन हय।
कुसुम आमोदे अलि सघने फिरय॥
क्षरो क्षरो याय प्रभु प्रति तरुतले।
विलसये ताहा छाया पाइया शीतले॥
बाजये मृदङ्ग बीरा यन्त्र सुरसाल।
केह नृत्य करे केह धरये सुताल॥
वृन्दावन सम सेइ वनेर माधुरी।
गरा सह प्रभु ताहा नित्य ये बिहरी॥
बहु दास मेलि करे वन संस्कार।
वर्णन ना हय बन विलास अपार॥
श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द दासेर अनुदास।
तृतीय-चतुर्थकालेर लीला कहे कृष्णदास॥

इति श्रीगौराङ्गलीलामृते तृतीय-चतुर्थकालीय लीलावर्णनम् ॥३-४॥

—:*:—

अपराह्णलीला

···:०:) ※ (:०:···

जय जय श्रीचैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौर भक्तवृन्द ॥
तबे गदाधर हाँसि कहे मृदु भाषे ।
अपराह्ण काल आसि हइल प्रवेशे ॥
तोमा लागि शचीमाता अति व्यग्र मन ।
भक्ष्य द्रव्य कैला बहु करिया यतन ॥
स्वर्ण थालि परे ताहा सुसज्ज करिया ।
आछेन तोमार पथ-पाने निरखिया ॥
शुनिया से प्रभु गदाधरेर वचन ।
कहे चल करि गिया नगर भ्रमण ॥
चलिला गौराङ्गचाँद नगर बाहिरे ।
दुइ भागे शोभे नित्यानन्द गदाधरे ॥
पाछे पाछे चलि याय आर भक्तगण ।
आनन्देर भरे मन्द मधुर गमन ॥
नदीयार पथे गोरा करिला विजय ।
देखि से मोहन रूप सबे फिरि चाय ॥
सुबलन सुदीर्घ से कनक शरीर ।
से रूप निछनि काम कमल सुनीर ॥
आजानु-लम्बित बाहु दुलि चलि याय ।
मृणाल द्विरद शुण्ड वर्णन ना याय ॥

कुञ्चित चिकुर चारु जगत मोहन ।
युवतिगणेर लज्जा सहिते बन्धन ॥
कुटिल कुन्तल येन भ्रमरेर पांति ।
झलके चन्दन भाले सुधाकर ज्योति ॥
चञ्चल लोचन भुरु कुसुम सन्धान ।
दृष्टिमात्र हाने द्रुत नागरी पराण ॥
मुखचन्द्रे हास मृदु सुधा बरिषय ।
लोभे कुलवती चित्त चकोरिणी धाय ॥
कुण्डल हिल्लोल कर्णे रतन मकरी ।
धाइया गिलये नारी पराण शफरी ॥
ग्रीवा कटिदेश शोभा मृगराज जिनि ।
नाशये युवती कुल धरम काहिनी ॥
सुविस्तार वक्षे रत्न मुकुतार दाम ।
मालतीर माला दोले अति अनुपम ॥
मलय चन्दन घन अङ्गे सुलेपन ।
वसन भूषण वेश भुवन-मोहन ॥
नदीयार राजपथे प्रभु चलि याय ।
स्त्री पुरुष बाल वृद्ध सबे शुनि धाय ॥
नदीयार पथ बालु सुश्वेत कोमल ।
दुइ पार्श्वे अट्टालिका श्वेत सुनिर्मल ॥
सुवर्ण कलस ध्वज परशे गगने ।
श्वेत पीत पताकादि उड़ये पवने ॥

चन्द्रशाला झापि कोँहा उड़े इन्द्रजाल ।
ग्रन्थित तोरण दोले मल्लिकार माल ॥
गौराङ्ग गमन पथे नगर नागरी ।
दरशन लोभे उठे अट्टालि उपरि ॥
सुधाकर माला किवा उदय आकाशे ।
विगलित केशभार मेघ गण्डपाशे ॥
मणिहार मणे येन नक्षत्र उदय ।
हासिर हिल्लोले किवा विजुरि पड़य ॥
मृदु सु-आलाप हय मधुर गर्जन ।
अनुराग नीरे पूर्ण पुष्कर नयन ॥
गौराङ्ग सुतनु येन सुवर्ण शेखरे ।
बरिषे पिरिति धारा ताहार उपरे ॥
नयनयुगल केह गवाक्षे सपिया ।
थाकये गौराङ्ग पथ-पाने निरखिया ॥
चतुर्योजन सीमा नदीया नगर ।
स्थाने स्थाने पुष्पोद्यान दिव्य सरोवर ॥
देउल प्रासाद कत देवता मन्दिर ।
सुपाँति शोभये दिव्य विचित्र प्राचीर ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र चारि जाति ।
सारि सारि शोभे गृह सुन्दर वसति ॥
योगी न्यासी ब्रह्मचारी असंख्य वैसय ।
कोन स्थाने गीता पुराणादि पाठ हय ॥

कोन स्थाने नृत्य-गीत वाद्य कोलाहल ।
शिशुगणे कोन ठाँइ बाजये कन्दल ॥
सहस्र सहस्र शिशु खेले कोन स्थाने ।
कत लक्ष विप्रगणे करे अध्ययने ॥
यूथे यूथे भट्टाचार्य्य एकत्र हइया ।
नदीयार बाटे सबे यायेन चलिया ॥
त्रिविध प्रकार लोक पथे चलि याय ॥
देखिया गौराङ्ग मुख अनिमिषे चाय ॥
कदम्ब बकुल वृक्ष आछे स्थाने स्थाने ।
तार तले पिण्ड बान्धा परम शोभने ॥
नगर बाजार आर चत्वर प्राङ्गण ।
सकल पूरित दिव्य मनुष्य गहन ॥
ग्रामेर अन्तरे बहु आम्रवृक्षगणे ।
माझे प्रफुल्लित सब कुसुम कानने ॥
नगर वेड़िया वहे सुरधुनी धार ।
यार तटे गौराङ्गेर मोहन विहार ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

नवद्वीप हेन ग्राम त्रिभुवने नाइ ।
यहि अवतीर्ण हैला चैतन्य गोसाञि ॥
अवतरिवेन प्रभु जानिया विधाता ।
सकल सम्पूर्ण करि थुइलेन तथा ॥ इति ॥

सम्पूर्ण शब्देर अर्थ शुन सब भाइ ।
हय नग्र विचारिया बुझह सबाइ ॥
अल्पाक्षरे बहु अर्थ करिल वर्णन ।
भाविया देखिले मिले अमूल्य रतन ॥
रत्नाकर अन्तर्गते महारत्नमय ।
नयने देखिवे जल विना किछु नय ॥
जल ना देखये यार नाहिक नयन ।
शुनिलेओ नाहि माने पापि अन्धजन ॥
सिन्धु अन्तर्गत वस्तु दृश्य नाहि हय ।
वृन्दावन दास वाक्य समुद्र आशय ॥
से मुख वर्णन केह बुझिबारे नारे ।
गौरगत प्राण यार से बुझिते पारे ॥
सम्पूर्ण शब्देते केह चतुर्द्दश पुरि ।
के बुझिबे से मुखेर वर्णन माधुरी ॥
चतुर्द्दश पुरि यत सुखेर विस्तार ।
रूप वैभवादि आर शील सदाचार ॥
विद्यामद भक्तिमद बुद्धिमद सीमा ।
धनमद दयामद कुलादि गरिमा ॥
रसिकता निपुणता आदि यत हय ।
सम्पूर्ण शब्देर एइ सब अर्थमय ॥
आर एक कहि आछे अमृत वचन ।
याहार श्रवणे सुखी हय कर्ण मन ॥

नवद्वीप येहेन मथुरा राजधानि।
नारायणी सुत मुखोद्गीर्ण एइ वाणी॥
नित्यानन्द कृपापात्र वृन्दावन दास।
यार पर हय तार कृपार आभास॥
सेइ तार वाक्य किछु पारे बुझिबारे।
पण्डिताभिमानि मात्र अहङ्कारे मरे॥

गीतं—

जय जय श्रीनदीया सुखधाम।
अद्भुत वसति वसत चतुराश्रम।
याइ निति निति उत्सव अनुपम॥ ध्रु॥
अष्टसिद्धि नवविध आदि प्रति मन्दिरे
नियत फिरत यनु दास।
धर्म अर्थ आर काम मोक्षगणे
गणत कौतुक करत उपहास॥
प्रबल प्रताप तापत्रय भञ्जन
नवधा दीप्त अनिवार।
निर्मल प्रेमपूर्ण अहर्निशि यहि
थीर चर सतत रहत मातोयार॥
विविध भाति गृह लसत सहस्र
परिवेष्टित सुरधुनी धवल सुपानि।
यनु नव कुन्दकुसुम मुकुता स्रजा
यनु शशिखण्ड उदय अनुमानि॥

शोभा नव नव वृन्दावन सम
षड़् ऋतु सेवित सरसदिगन्त ।
मञ्जु महामहिमा महि विस्तृत
गायत फणि ना पायत अन्त ॥
सुर सह सुरवर हर चतुरानन
ध्यान करत उरह रस अपार ।
भण घनश्याम सो पहु परिकर
सञे निबसब उह भुमिमाझार ॥१॥

नगर भ्रमण प्रभु करि कत क्षण ।
सुरधुनी पथे तबे करिला गमन ॥
सपार्षदे महाप्रभु गङ्गातीरे आसि ।
बसिला गङ्गार घाटे नदीयार शशी ॥
सुरधुनी तटे शोभे पुलिन सुन्दर ।
यत साल पेयालादि कदम्ब निकर ॥
मयूर कोकिला आदि भ्रमरार गण ।
पुष्पवन माझे कत उड़ये सघन ॥
पाथर बन्धन सब घाट थरे थरे ।
लक्ष लक्ष शिवालय ताहार उपरे ॥
बसिवारे स्थाने स्थाने अपूर्व मन्दिर ।
निकटे प्रवाह अति सुनिर्मल नीर ॥
गङ्गा घाटे बसि आछे गौराङ्ग सुन्दर ।
मदनमोहन रूप सर्ब मनोहर ॥

अविरत हासि माखा सुचारु वदने ।
वाकवाक्य परिहास निजजन सने ॥
जल आनिबारे याय यत नारीगण ।
लज्जा तेयागिया चाय गौराङ्ग वदन ॥
गङ्गाजल भरे केह गोरा पाने चाय ।
हाते हैते कुम्भ कारु खसिया पड़य ॥
सहस्र सहस्र विप्र नागरीया गणे ।
मण्डली करिया बसियाछे स्थाने स्थाने ॥
कतेक वा भट्टाचार्य्य पड़ुया अपार ।
सबे मेलि परस्पर करेन विचार ॥
कि शोभा हइल सेइ गङ्गार दुपाशे ।
विशेष उज्ज्वल गोराचाँदेर प्रकाशे ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

गङ्गातीरे बसिलेन श्रीशचीनन्दन ।
चतुर्दिके बेड़िया बसिला शिष्यगण ॥
कालिन्दीर तीरे येन श्रीनन्दकुमार ।
गोपवृन्द मध्ये बसि करिला विहार ॥
सेइ गोपवृन्द लइ सेइ कृष्णचन्द्र ।
द्विज रूपे गङ्गातीरे करे नाना रङ्ग ॥
गङ्गातीरे ये जन देखये प्रभु मुख ।
सेइ पाय अति अनिर्वचनीय सुख ॥

देखिया प्रभुर तेज अति विलक्षण ।
गङ्गातीरे कोलाकोली करे सर्वजन ॥
अध्यापक प्रति प्रभु कटाक्ष करिया ।
व्याख्या करे प्रभु गङ्गा तीरेते बसिया ॥
चतुर्दिके देखे सब भाग्यवन्त लोक ।
सर्व नवद्वीप प्रभु प्रभावे अशोक ॥ इति ॥

हेन मते भक्त सङ्गे श्रीशचीनन्दन ।
गङ्गारे वन्दिया कैला गृहेते गमन ॥
गोधूली समये प्रभु चले राजपथे ।
नगर प्रवेश करे गरु यूथे यूथे ॥
शत शत गोपशिशु याय तार सङ्गे ।
ऊर्द्ध्व पुच्छ करि बहु वत्स धाय रङ्गे ॥
देखिया प्रभुर अति उल्लास अन्तरे ।
धबलि बलिया डाके गद-गद स्वरे ॥
गङ्गा पथे सहस्र सहस्र विप्रगणे ।
सन्ध्या करिबारे सबे करेन गमने ॥
पड़िया शुनिया सब ब्राह्मण कुमार ।
कोलाहल करे गृहे यायेन अपार ॥
प्रभु आसि बसिलेन आपन मन्दिरे ।
भक्त सब चलि गेला निज निज घरे ॥
तबे शचीदेवीर मने आनन्द बाढ़िल ।
पुत्रमुख देखि सुखसिन्धु उथलिल ॥

धीरे धीरे आसि गोरा निकटे बसिया ।
स्नेह बशे अङ्ग मोछे निज वस्त्र दिया ॥
यशोदा करये येन कृष्णेर लालने ।
से उपमा बिना आर नाहि त्रिभुवने ॥
तबे सर्व दासगणे अति त्वरा करि ।
जल पूर्ण करिया आनिल स्वर्ण झारि ॥
पाद-प्रक्षालन करि दिला कोन जन ।
केश संस्कार करि करिला बन्धन ॥
सुवासित जले अङ्ग मार्जन करिया ।
शेषे पुन मार्जिलेन सूक्ष्म वस्त्र दिया ॥
वसन दूषण सब परिवर्त्त करि ।
विष्णु गृहे प्रविष्ट हइला गौरहरि ॥
शचीर आदेशे तबे देवी विष्णुप्रिया ।
दीप जालि देवालये थुइलेन गिया ॥
गृहे ये आछेन शीलामूर्त्ति रघुनाथ ।
आरति करिला प्रभु हैला प्रणिपात ॥
बहु उपहार आनि करि समर्पण ।
आचमन दिया पुन कराइया शयन ॥
गौराङ्ग बसिला आसि दिव्य सिंहासने ।
शचीर आनन्द यत ना याय वर्णन ॥
विष्णु गृहे यत किछु उपहार छिल ।
रात्रेर कारणे बहु पृथक् धरिल ॥

किछु आनि दिल शचीपुत्रेर सम्मुखे ।
हासिया भोजन प्रभु करे महासुखे ॥
आचमन करिया बसिलेन गौरराय ।
विष्णुप्रिया देवी रहि ताम्बूल योगाय ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

मायेर मनेर अति आनन्द जानिया ।
लक्ष्मीर सहित प्रभु थाकेन बसिया ॥ इति ।
अति शीघ्र करि प्रभु आवेशित मने ।
श्रीवासेर बाड़ि प्रति करिला गमने ॥
किबा शोभा हैल सेइ सन्ध्यार समय ।
चतुर्द्दिके गीत-वाद्य महा ध्वनि हय ॥
उज्ज्वल दीपक सब जले सारि सारि ।
दीपेर प्रकाशे सब सुनिर्मल पुरि ॥
मत्त सिंह गति जिनि पथे चलि याय ।
आसिया मिलिला प्रभु श्रीवास आलय ॥
प्रभुरे देखिया हर्षे पण्डित श्रीवास ।
सगोष्ठिते हैला अति आनन्द उल्लास ॥
चरण वन्दना करि धोयाइला चरणे ।
प्रभुरे बसाइ लैया दिव्य सिंहासने ॥
श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द दासेर अनुदास ।
पञ्चम कालेर लीला कहे कृष्णदास ॥

इति श्रीगौराङ्गलीलामृते पञ्चमकालीय लीला वर्णनम् ॥५॥

सायं एवं प्रदोषलीला

—:०:*:०:—

जय जय श्रीचैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत चन्द्र जय गौरभक्तवृन्द ॥
नित्यानन्द प्रभु आसि मिलिला तखन ।
प्रभुर दक्षिणे बैसे प्रफुल्ल वदन ॥
मिलिला अद्वैतचन्द्र प्रेमेर सागर ।
गदाधर नरहरि मुकुन्द श्रीधर ॥
बक्रेश्वर हरिदास आदि भक्तगणे ।
शीघ्र आइलेन सबे श्रीवास भवने ॥
छत्र धरिलेन शिरे नित्यानन्द राय ।
वामभागे गदाधर चामर ढुलाय ॥
केह नाचे गाय केह करये कीर्त्तन ।
रत्न दीपक ज्वालि धरे कोन जन ॥
गृहमाझे नारीगणे देइ जय कारे ।
मृदङ्ग मन्दिरा घण्टा वाद्य सुझालरे ॥
पञ्चशिखा जालि भालो अद्वैत गोसाञि ।
आरति करेन आनन्देर अन्त नाइ ॥

तथाहि गीतं— (गौरीराग)

जय जय आरति गौरकिशोर ।
विलसत सिंहासन यतु कनकाचल
डगमग जगति युवतिच्चितचोर ॥ ध्रु ॥

श्रीअद्वैत प्रेमभरे गर-गर
आरति करु निज नाथ नेहारि,
दक्षिणभागे भाति रीति अद्भुत
नित्यानन्दचन्द्र रसे भोर।
वामे गदाधर सरसभङ्गी तहि
कोइ धरत नव छत्र उजोर ॥
श्रीवास बरषत कुसुमावली
चामर करु नरहरि अनिवार।
शुक्लाम्बर चरचत चन्दन
गुप्त मुरारि करत जयकार ॥
माधव वासुघोष पुरुषोत्तम
विजय मुकुन्द आदि गुणि भूप।
गायत मधुर राग श्रुति मूरछन
ग्राम सप्त सरोभेद अनुप ॥
बाजत मुरज मृदङ्ग चङ्ग
डम्फ वेणु निशानवेणु चलुओर।
घननन घण्टा झम झम कत झालरि
झाँज गरजे घन घोर ॥
नाचत परम हर्षे बक्रेश्वर
सरस भाति गति नटन सचार।
उघटन विधि कटतक थै थै
थंति विविध परकार ॥

विवश पूरव रसे रसिक गदाधर
श्रीधर गौरीदास हरिदास ।
को विरचब सब भकत मत्त अति
गौरमुख मधुरिम हास ॥
सुरगण गगने मगन गणसह सुरपति
कत यतने करत परिहार ।
पार्वतीपति चतुरानन पुलकित
झर झर नयने झरत जलधार ॥
त्रिभुवन उलस शेष यश वरणत
स्तुति करु मुनि नर नाम उचारी ।
नरहरि पहुँ व्रजभूषण रसमय
नदीयापुर परमानन्दकारी ॥

आरति समापि तबे अद्वैत ठाकुर ।
हुङ्कार करिया नृत्य करये प्रचुर ॥
येवा केह भक्तवृन्द आसिवारे छिला ।
एके एके आसि तथा सबाइ मिलिला ॥
बधूरे लइया आइला शची ठाकुराणी ।
सीतादेवी सह भक्तवर्गेर गृहिणी ॥
सबाइ मिलिला आसि श्रीवासेर घरे ।
देखये गौराङ्गरूप थाकिया अन्तरे ॥
कपाट दिलेन द्वारे प्रभुर इङ्गिते ।
निज जन भिन्न अन्य नारे प्रवेसिते ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

कपाट पड़िल द्वारे प्रभुर आज्ञाय ।
आप्तगण विना अन्य याइते ना पाय ।। इति ।।
सिंहासने बसि हासे शचीर नन्दन ।
निजरूप गुणे आकर्षये सर्व मन ।।
नित्यानन्द गदाधर अद्वैत श्रीवासे ।
निरन्तर प्रेमसिन्धु माझे सबे भासे ।।
रात्रेर प्रवेशे सबे उलसित मन ।
यार येन भाव तेन करे दरशन ।।
केह स्तुति करे केह करये सेवने ।
कुसुम अञ्जलि केह देय श्रीचरणे ।।
केह केह आनि देय नाना उपहार ।
ताम्बूल योगाय केह आनन्द अपार ।।
कृष्णकथा रङ्गे प्रभु थाकि कतक्षण ।
अनन्त प्रदोष लीला ना याय वर्णन ।।
श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द दासेर अनुदास ।
सायं-प्रदोष रात्रेर लीला कहे कृष्णदास ।।

इति श्रीगौराङ्गलीलामृते सायं-प्रदोषकालीय लीलावर्णनम् ।।६-७।।

—:※:—

नैशलीला

…०:) ※ (:०…

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौर भक्तवृन्द ॥
हासि महाप्रभु तबे श्रीचन्द्रवदन ।
आज्ञा करिलेन सबे करह कीर्त्तन ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

सर्व वैष्णवेर हैल शुनिया उल्लास ।
आरम्भिला महाप्रभु कीर्त्तन विलास ॥
श्रीवास मन्दिरे प्रति निशाय कीर्त्तन ।
कोन दिन हय चन्द्रशेखर भवन ॥
कीर्त्तनेर शुभारम्भ करिला मुकुन्द ।
राम कृष्ण नरहरि गोपाल गोविन्द ॥
नित्यानन्द गदाधर अद्वैत श्रीवास ।
विद्यानिधि मुरारि हिरण्य हरिदास ॥
गङ्गादास वनमाली विजयनन्दन ।
जगदानन्द बुद्धिमन्त खान नारायण ॥
काशीश्वर वासुदेव राम गरुड़ाइ ।
गोविन्द गोविन्दानन्द सकल तथाइ ॥
गोपीनाथ जगदीश श्रीमान् श्रीधर ।
सदाशिव बक्रेश्वर भूगर्भ शुक्लाम्बर ॥

ब्रह्मानन्द पुरुषोत्तम सञ्जयादि यत ।
अनन्त चैतन्यभृत्य नाम जानि कत ॥
सबेइ प्रभुर नृत्ये थाकेन संहति ।
पारिषद विना आर केह नाहि तथि ॥
प्रभुर हुङ्कार आर निशाय हरिध्वनि ।
ब्रह्माण्ड भेदये येन हेन मत शुनि ॥
वलिगया मरये यत पाषण्डिर गण ।
आनन्दे कीर्त्तन करे शचीर नन्दन ॥
से सकल शरीरे आछाड़ बड़ देखि ।
गोविन्द स्मरये आइ मुदि दुइ आँखि ॥
कखन ईश्वर भावे प्रभुर प्रकाश ।
कखन रोदन करे बले मुइ दास ॥
पुण्यवन्त श्रीवास अङ्गने शुभारम्भ ।
उठिल कीर्त्तन ध्वनि गोपाल गोविन्द ॥
श्रीवास पण्डित लइ एक सम्प्रदाय ।
मुकुन्द लइया आर जन कतो धाय ॥
लइया गोविन्द दत्त आर कतोजन ।
गौरचन्द्र नृत्ये सबे करेन कीर्त्तन ॥
धरिया बलेन नित्यानन्द महाबली ।
अलक्षिते अद्वैत लयेन पदधूली ॥
गदाधर आदि यत सजल नयने ।
आनन्दे विह्वल हैला प्रभुर कीर्त्तने ॥

यखन उद्दण्ड नाचे प्रभु विश्वम्भर।
पृथिवी कम्पित हय सबे पाय डर॥
कखन वा मध्यम नाचये विश्वम्भर।
येन देखि नन्देर नन्दन नटवर॥
क्षणे ध्यान करि करे मुरलीर छान्द।
साक्षात् देखये येन वृन्दावन चान्द॥
यखन ये भाव हय सेइ अदभुत।
निज नामानन्दे भासे जगन्नाथ सुत॥
क्षणे क्षणे महास्वेद हय कलेवरे।
मूर्त्तिमती गङ्गा येन आइला शरीरे॥
प्रभुर आनन्द देखि भागवत गण।
अन्ये अन्ये गला धरि करये क्रन्दन॥
सबार श्रीअङ्गे शोभे श्रीचन्दन माला।
आनन्दे गायइ कृष्ण सबे होइ भोला॥
मृदङ्ग मन्दिरा बाद्य शङ्ख करताल।
संकीर्त्तन सङ्गे सब हइल मिसाल॥
ब्रह्माण्डे उठिल ध्वनि पूरिया आकाश।
चौदिकेर अमङ्गल याय सब नाश॥
ए कोन् अद्भुत यार सेवकेर नृत्ये।
सर्व विघ्न नाश हय जगत पवित्रे॥
से प्रभु आपने नाचे आपनार नामे।
इहार कि फल इहा बलिब पुराणे॥

चतुर्द्दिके मङ्गल श्रीहरि सङ्कीर्त्तन।
मध्ये नाचे जगन्नाथ मिश्रेर नन्दन॥
यार नामानन्दे शिव वसन ना जाने।
यार नामे ब्रह्मा नाचे से नाचे आपने॥
यार नामे बाल्मीकि हइल तपोधन।
यार नामे अजामिल पाइल मोचन॥
यार नाम लइ शुक नारद बेड़ाय।
सहस्र वदने शेष यार गुणगाय॥
निज नामानन्दे नाचे प्रभु विश्वम्भर।
चरणेर तालि शुनि अति मनोहर॥
सकल वैष्णव प्रभु देखे एके एके।
भावावेशे पूर्व्व नाम धरि सबा डाके॥
हलधर शिव शुक नारद प्रह्लाद।
रमा अज उद्धव बलिया करे नाद॥
पूर्व्वे येइ सामाइल बाड़िर भितरे।
सेइ मात्र देखे अन्य प्रवेशिते नारे॥
येन महारास क्रीड़ा कत युग गेल।
तिलार्द्धेक हेन सब गोपिका मानिल॥
एइ मत कृष्णेर अचिन्त्य परकाश।
इहा जाने भाग्यवन्त चैतन्येर दास॥ इति॥

—:*:—

तथाहि पदं—

जयरे जयरे गोरा श्रीशचीनन्दन
मङ्गल नटन सुठान ।
कीर्त्तन आनन्दे श्रीवास रामानन्दे
मुकुन्द वासुगुण गान ॥ ध्रु ॥
द्रां द्दमिकि द्दमिकि द्दमि मादल बाजत
मधुर मञ्जिर रसाल ।
पिरिति फुलसरे मरम भेदल
भावे सहचर भोर ॥

तथाहि पदं—

जय जय गदाधर गौराङ्ग सुन्दर ।
एक आतमा प्रकट भाव दुइ कलेवर ॥
वृन्दावने राधाकृष्ण नवयुवद्वन्द्व ।
इदानी प्रकट गदाधर गौरचन्द्र ॥
महाभाव स्वरूपा राधा वृन्दावनेश्वरी ।
सेइ एइ गदाधर पण्डितावतारी ॥
रसराजमय मूर्त्ति व्रजेन्द्रनन्दन ।
सेइ एइ गौरचन्द्र पूर्ण प्रकटन ॥
रागानुगा मार्गे ये भजिते साध करे ।
पण्डित गोसाञिर शिष्यगण अनुसारे ॥
ए सभार अनुगा बिनु व्रज प्राप्ति नाइ ।
अतएव ताँर शाखा व्रजेर गोसाञि ॥

यॉंर लागि लक्ष्मीदेवी अन्तर्मना हैया ।
अद्यावधि तप करे ताँहार लागिया ॥
तथापि ना पाय सेइ व्रजेन्द्रनन्दन ।
तेँहो यार प्रेमे वश हन अनुक्षण ॥
सेइ राधा हय एइ पण्डित गोसाञि ।
गौरप्रेम सुधारस पाइ यार ठाँइ ॥
अतएव ताँरे येवा हय रति हीन ।
प्रेमभक्ति नाइ तार हय महादीन ॥
इहातेइ येइ जन ना करे विश्वास ।
कोटि जन्मे नाहि त्राण तार सर्वनाश ॥
गदाधर गौराङ्ग पदे एइ निवेदन ।
से सकल सङ्ग येन ना हय कखन ॥
पाषण्ड आलाप सङ्ग सेहो मोर भाल ।
पण्डित निन्दक सङ्ग सेइ मोर शेल ॥
मदिरा सेवन मोर चित्ते यदि भाय ।
तथापि ताहार सङ्ग भय करे काय ॥
गदाधर-गौर पदाम्बुज करि आश ।
चरणे शरण मागे ए लोचनदास ॥ १ ॥

भज भज मन　　माधव नन्दन
गदाधर आख्या यार,
ताँहार चरण　　ये करे शरण
सेइ याय व्रजधाम ।

बहुसखी सङ्गे कुतूहलरङ्गे
सेवि सुखी कैल श्याम ॥
पूर्वे व्रजपुरे वृषभानु घरे
धरिया राधिका नाम ।
से रूप ए रूपे रसमय भूपे
एक भावे भज अविश्राम ॥
एवे गौर सङ्गे अवतरी रङ्गे
हइला वैरागी-वेश ।
निलाचले आसि भक्तसङ्गे बसि
तारिला अनेक देश ॥
से प्रेमपाथारे जगत साँतारे
ताप गेल सब नाश ।
प्रेमेर सायरे ना देखे पामरे
कहे ए लोचनदास ॥ २ ॥

गदाधर गदाधर गदाधर आशे ।
गदाधर पाइ येन व्रजपुर वासे ॥
गदाधर नाम लैया हब उदासीन ।
खाइब करङ्गे जल परिब कौपीन ॥
एइ से मनेर आशा हय बहुदिने ।
गदाधर-गौर प्रेम शुनिब श्रवणे ॥
सेइ गुरु सेइ शिष्य तोमाके ये जाने ।
तोमा छाड़ि भक्ति करे चक्षुहीन जने ॥

गदाधर पादपद्मे येइ रतिहीन ।
संसार सागर माझे सेइ जन दीन ॥
गदाधर पादपद्मे एइ अभिलाष ।
चरणे स्मरण मागे ए लोचनदास ॥ ३ ॥

कोइ कहत गोरा जानकीवल्लभ
राधाप्रिय पाँच वाण रे ।
नयनानन्देर मने आन नाहिक जाने
आमारि गदाधरेर प्राणरे ॥ १ ॥

विहरे कीर्त्तन सुखे गौराङ्गसुन्दर ।
अधिक हइल निशा द्वितीय प्रहर ॥
कतक्षण अन्ते प्रभु कीर्त्तन राखिया ।
अङ्गने बसिला सब भक्तवर्ग लैया ॥
कीर्त्तनेर परिश्रम दूर करिबारे ।
व्यजनादि सेवा करे प्रिय परिकरे ॥
शचीदेवी लइ सङ्गे लक्ष्मी विष्णुप्रिया ।
चलिलेन गृह प्रति त्वरा युक्त हैया ॥
आर यत भकतगणेर परिवारे ।
हरिषे चलिला सबे आपन मन्दिरे ॥
एथा शचीदेवी मुक्त करिया दुयार ।
गृहमाझे प्रवेशिला आनन्द अपार ॥
भक्षणेर उतयोग लागिला करिते ।
नेत्र दिया रहे गोरा गमनेर पथे ॥

गौराङ्ग विदाय दिया सब भक्तगणे ।
आसिया बसिला प्रभु आपन भवने ॥
कोन दिन ग्रीष्मकाले करिया कीर्त्तन ।
भक्त सह करे रात्रे गङ्गाय मज्जन ॥
कीर्त्तन विहार श्रम दूर करिवारे ।
सूक्ष्म तितावस्त्रे अङ्ग मोछाये किङ्करे ॥
वस्त्र परिवर्त्तन करि धुइ श्रीचरण ।
आसने बसिला गिया करिते भोजन ॥
सुवर्ण थालिते नाना भक्ष्य उपहारे ।
शचीदेवी आनि दिल पुत्रेर गोचरे ॥
सम्मुख बसिया आइ वदन नेहारे ।
आग्रह करिया खाओयायेन स्नेहभरे ॥
ईषत् हासिया प्रभु करये भोजन ।
लक्ष्मी-विष्णुप्रिया देखे भरिया नयन ॥
भोजन समापि प्रभु करि आचमन ।
निभृते बसिया करे ताम्बूल भक्षण ॥
तबे प्रवेशिला प्रभु शयन मन्दिरे ।
शयन करिला गिया पालङ्क उपरे ॥
प्रभु अवशेष द्रव्य यत किछु छिल ।
लक्ष्मीविष्णुप्रिया ताहा भोजन करिल ॥
ईषाणादि करिया यतेक दासगणे ।
गृह संस्कार करि करिला शयने ॥

अलक्षिते याइ शीघ्र लक्ष्मीविष्णुप्रिया ।
प्रभुर चरणसेवा करेन आसिया ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

भोजन अन्तरे प्रभु ताम्बूल भोजन ।
शयन करिले लक्ष्मी लयेन चरण ॥ इति ॥
हरिदास गदाधर आदि भक्तगण ।
प्रभुर मन्दिरे कोन निशाय शयन ॥
नित्यानन्द प्रभु एथा भोजन करिया ।
शयन करिला अति आनन्दित हैया ॥
अद्वैत श्रीगदाधर आर वक्रेश्वर ।
श्रीवास श्रीनरहरि आदि परिकर ॥
निज निज गृह प्रति सबे चलि गेला ।
भोजन समापि सबे शयन करिला ॥

श्रीचैतन्यभागवते—

अद्यापिह सेइ लीला करे गौरराय ।
कोन कोन भाग्यवन्त देखिवारे पाय ॥ इति ॥
निशबद हइल ये यत स्थिरचर ।
सुखे निद्रा याय प्रभु गौराङ्गसुन्दर ॥
श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द दासेर अनुदास ।
निशार विलासलीला कहे कृष्णदास ॥

इति श्रीगौराङ्गलीलामृते अष्टमकालीय लीलावर्णनम् ॥८॥

सम्पूर्णोऽयं ग्रन्थः ॥



मुद्रक-श्रीगदाधर गौरहरि प्रेस, कालीदह, वृन्दावन (मथुरा)